अप्रैल 2014

दादावाणी

मूल्य : ₹ १०

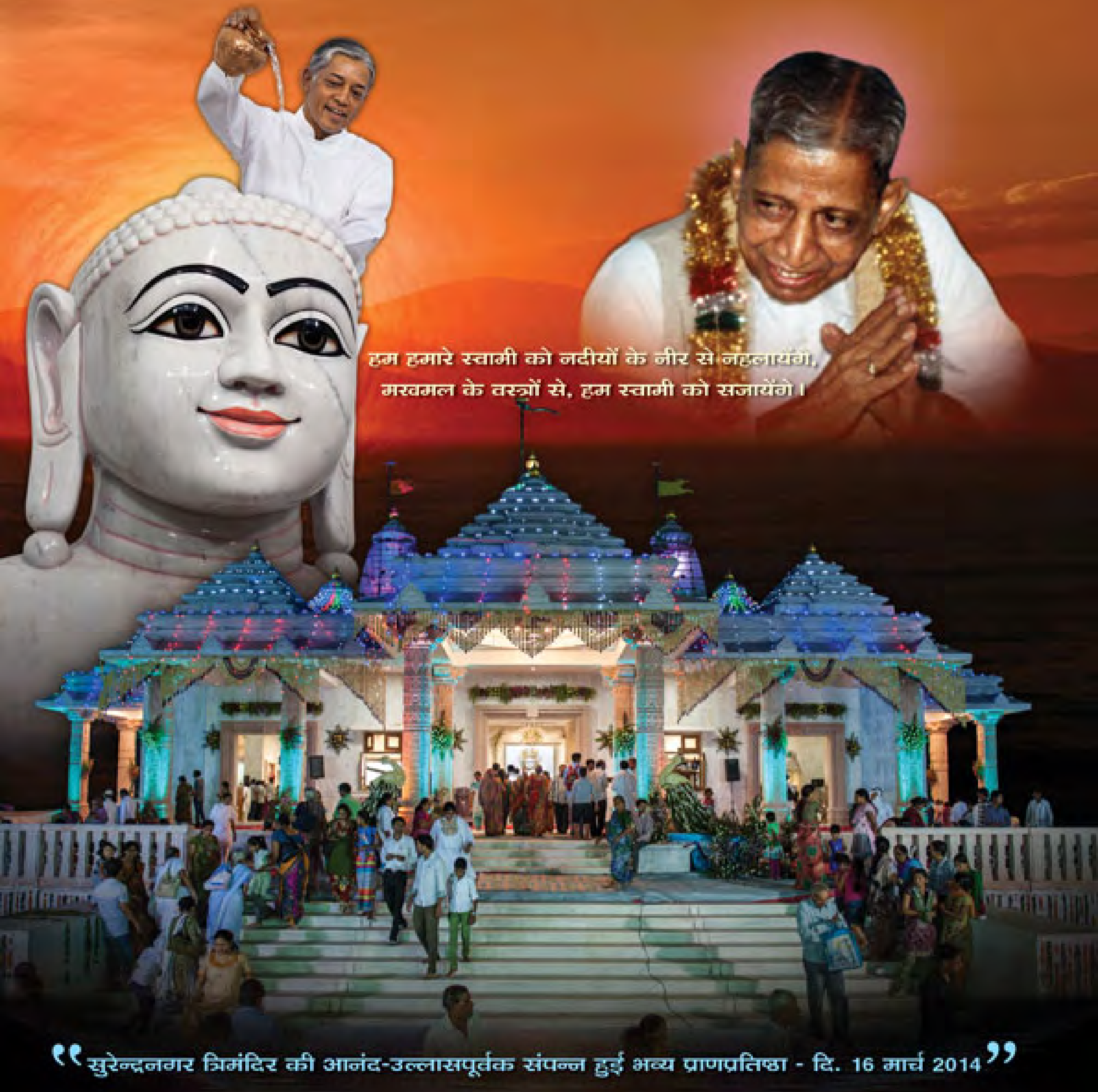

"सुरेन्द्रनगर त्रिमंदिर की आनंद-उल्लासपूर्वक संपन्न हुई भव्य प्राणप्रतिष्ठा - दि. 16 मार्च 2014"

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ९ अंक : ६
अखंड क्रमांक : १०२
अप्रैल २०१४

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI, Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421. Dist-Gandhinagar.

Total 28 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

परमाणुओं की अवस्थाएँ

संपादकीय

इस जगत् का वास्तविक रूप क्या है? यह जगत् छः अविनाशी तत्वों के आवागमन का परिणाम मात्र है। पूरा जगत् इन छः तत्वों से खचाखच भरा हुआ है। और इन तत्वों के संयोजन से परमाणुओं की विविध अवस्थाएँ विभाविक स्वरूप से द्रश्यमान होती हैं।

आत्मा चेतन तत्व है और जड़ तत्व परमाणु रूपी है। इन परमाणुओं की तीन अवस्थाएँ हैं: प्रयोगशा, मिश्रसा और विश्रसा। शुद्ध परमाणु, वह विश्रसा है। अब जब व्यक्ति को कर्तापन के भान से क्रोध-मान-माया-लोभ होते हैं, तब बाहर से विश्रसा परमाणु, शरीर में प्रवेश करते हैं और इलेक्ट्रिकल बॉडी के आधार से चार्ज हो जाते हैं। जैसे भाव, वैसे ही रंग से परमाणु रंग जाते हैं। यह जो चार्ज हुए, वह प्रयोगशा है। वे सूक्ष्मरूप में होते है। प्रयोगशा वे कारण परमाणु हैं, और जब वे अगले जन्म में गर्भ में जाते हैं, तब मिश्रसा के रूपी बन जाते हैं। मिश्रसा बनते ही कार्य देह उत्पन्न होती है और वे स्थूलरूप में फल देकर विश्रसा हो जाते हैं। मिश्रसा, वही *पुद्गल* है। प्रयोगशा को *पुद्गल* नहीं कहलाता।

मिश्रसा रूपी चार्ज परमाणु जब डिस्चार्ज होते हैं, तब कड़वे-मीठे फल आते हैं। पहले सूक्ष्म स्तर पर इफेक्ट आता है, जिसके आधार पर स्थूल स्तर पर परमाणु खिंचे चले आते हैं और बाहर स्थूल रूप से इफेक्ट आता है। और इफेक्ट में राग-द्वेष होने से, कर्ताभाव से, वापस चार्ज हो जाता है।

कर रहा है व्यवस्थित और मानता है कि 'मैंने किया', इससे विश्रसा परमाणु अंदर खिंच जाते हैं और प्रयोगशा बन जाते हैं और अगले जन्म की नई मूर्ति आकार लेती है। फिर प्रयोगशा चला जाता है, व्यवस्थित शक्ति के ताबे में और जब व्यवस्थित शक्ति वापस स्थूलरूप में फल देती है, तब वह मिश्रसा कहलाते है। इस प्रकार यों स्थूल में से सूक्ष्म और सूक्ष्म में से स्थूल, ऐसा चक्र चलता रहता है। तो फिर जीव के लिए इस चक्र में से मुक्त होने का उपाय क्या है? तीर्थंकर भगवंतों ने केवलज्ञान में इस परमाणु विज्ञान को जाना और अलग देखा, अनुभव किया, उससे मुक्त हुए और उन्होंने मुक्त होने का उपाय प्रबोधित किया।

इस काल में बलिहारी है अक्रम विज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) की, जिन्होंने इस परमाणु विज्ञान को जुदा देखा-जाना और अनुभव किया। इतना ही नहीं बल्कि ज्ञानसिद्धि से मनुष्य के भव चक्र के कारणरूपी परमाणुओं के चार्जिंग पोइंट पर ही भेदांकन कर दिया, स्वरूप की प्रतीति करवाई, शुद्धात्मा के लक्ष्य द्वारा उसे *पुद्गल* से मुक्त कर दिया। अब क्या शेष रहा? वह है आज्ञा पालन, प्रतिक्रमण और सामायिक। पूर्ण आत्मदशा को प्राप्त करने के इन साधनों से, अशुद्ध हुए परमाणुओं के उदय में आने पर, उनके ज्ञाता-दृष्टा रहने से उनका शुद्धिकरण होता रहता है।

पुद्गल मिश्रचेतन है, ज्ञेय है और चेतन के रूप में हम ज्ञायक हैं। जितना ज्ञायक-ज्ञेय का संबंध रहता है उतने मिश्रसा परमाणु शुद्ध हुए अर्थात् नया कर्म बंधन हुए बगैर *संवरपूर्वक निर्जरा* होकर विश्रसा हो जाते हैं। ऐसे करते-करते एक-एक परमाणु का हिसाब चुक जाने पर हम हो जाएँगे मुक्त! ज्ञेय वे शुद्ध होकर चले जाते हैं। और मुक्त होना, वही अपना ध्येय है न? तो चलिए, यहाँ प्रस्तुत दादाश्री उद्बोधित परमाणु के विज्ञान को समझकर परमाणु से मुक्त होने का पुरुषार्थ प्रारंभ करके हम अपना काम निकाल लें।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

परमाणुओं की अवस्थाएँ

पुद्गल - परमाणु का भेद

प्रश्नकर्ता : दादा, ये जो *पुद्गल* (जो *पूरण* और *गलन* होता है) और परमाणु हैं, वे एक हैं या अलग?

दादाश्री : दोनों अलग कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर *पुद्गल* और परमाणु की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : जिसके वापस हिस्से नहीं हो सके, वह परमाणु है। और यर्थाथ रूप में परमाणु, परमाणु ही कहलाते हैं। यह *पुद्गल,* वह विभाविक हो चुका है। विशेष भाववाला हो चुका है, यह *पुद्गल*।

वे सभी परमाणु हैं और परमाणु के अलावा और कुछ है ही नहीं! लेकिन परमाणु नहीं कहना है, *पुद्गल* कहना है। *पुद्गल* जो है वह अभी मूल परमाणुओं के रूप में नहीं है बल्कि अवस्था रूपी है।

दो प्रकार के *पुद्गल* हैं: एक, विशेषभाव प्राप्त (उसे विभाविक *पुद्गल* कहते हैं) और दूसरा, मूल *पुद्गल,* स्वाभाविक। जो परमाणु के रूप में है। (वह *पुद्गल* परमाणु कहा जाता है) विभाविक *पुद्गल* में तो परमाणओं के जत्थे होते हैं, जबकि स्वाभाविक *पुद्गल* परमाणु के रूप में होता है।

प्रश्नकर्ता : *पुद्गल* भी परमानेन्ट (कायमी) है क्या?

दादाश्री : हाँ, मूल *पुद्गल* परमाणु स्वभाव से परमानेन्ट है। और यह (विभाविक) *पुद्गल* तो विकृत *पुद्गल* है, मूल स्वाभाविक *पुद्गल* परमाणु नहीं है। जबकि विकृत *पुद्गल* विनाशी है, गुरु-लघु स्वभाव का है और वास्तविक *पुद्गल* परमाणु तो अगुरु-लघु स्वभाववाला है।

नहीं होता परमाणुओं का आदि या अंत

प्रश्नकर्ता : वैज्ञानिक वह खोजना चाहते हैं कि इन *पुद्गल* परमाणुओं की उत्पत्ति कहाँ से हुई?

दादाश्री : क्या खोजना चाहते हैं? उत्पत्ति? उनसे कहना कि 'अविनाशी चीज़ की उत्पत्ति नहीं होती। जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका फिर नाश हो जाता है। अतः उत्पत्ति नहीं हुई है,' कहना। लेकिन उनकी समझ में नहीं आएगी न वस्तु, जब तक बुद्धि से समझने जाएँगे तब तक।

इन लोगों ने एटम को खोज निकाला है न! एटम (अणु) को खोज लिया है। परमाणु तो एटम से भी छोटी वस्तु है। एटम तो उन्हें दिखा भी है।

प्रश्नकर्ता : परमाणु सूक्ष्म हुआ न?

दादाश्री : वे आँखों से दिख नहीं सकें उतने सूक्ष्म। अंतिम, जिसके भाग न हो सकें, विभाजन न हो सके, वह परमाणु कहलाते हैं। यह *पुद्गल* जो है, वह परमाणुओं से ही बना हुआ है।

बुद्धि नहीं पहुँच सकती, परमाणु के पास

प्रश्नकर्ता : अणु के लिए 'एटम' शब्द है, तो परमाणु के लिए इंग्लिश में कौन सा शब्द है?

दादाश्री : यहाँ पर परमाणु शब्द नहीं हो सकता। उसके लिए शब्द नहीं है। जो दिखाई दे उसके लिए शब्द मिल सकता है लेकिन जो दिखाई नहीं दे उसके लिए शब्द नहीं मिल सकता।

प्रश्नकर्ता : दादा, परमाणु का अंग्रेजी शब्द नहीं है तो क्या हम उसे एटम कह सकते हैं, जब परमाणु की बात करें, तब?

दादाश्री : एटम तो परमाणु की अवस्था है।

प्रश्नकर्ता : वेर्स्टन फिलोसूफी (पश्चिमी दर्शन) 'मेटर' शब्द का उपयोग करती है, वही परमाणु है क्या?

दादाश्री : मेटर इज़ नॉट परमाणु, बट मेटर इज़ द फेज़ ऑफ परमाणु। (मेटर परमाणु नहीं हैं, वह परमाणु की अवस्था है।)

केवल अवस्थाएँ ही बुद्धिगम्य हैं। जो आँखों से दिखाई दे, या फिर बुद्धि से दिखाई दें, वे सिर्फ अवस्थाएँ ही हैं वह मूल वस्तु नहीं है। अत: एटम को वे लोग देख पाए और इतना सोच भी पाए कि इसके और भी हिस्से हो सकते हैं। और जबकि परमाणु के हिस्से नहीं हो सकते।

प्रश्नकर्ता : वैज्ञानिकों का कैसा है, कि यदि हम कहें कि ये परमाणु ऐसे हैं और टूट सकें ऐसे नहीं हैं, तो फिर वे लोग इसका प्रयोग करेंगे और यदि प्रयोग में यह साबित नहीं होता, तो वे मानेंगे नहीं कि यह बात सही है। उस स्थिति में यहाँ के साइन्टिस्टों को इसका हल (समझ) आप किस प्रकार दे सकेंगे कि यह परमाणु अविभाज्य है।

दादाश्री : वह तो अविभाज्य है। और वे चाहे कितने भी विभाजन करते-करते पहुँचें न, लेकिन बाद में जो अंतिम विभाजन होनेवाला होता है, वहाँ आँखों से नहीं देखा जा सकता, दूरबीन से नहीं देखा जा सकता, अर्थात् वह इन्द्रियगम्य नहीं है, न ही वह बुद्धिगम्य है। अत: बुद्धि से परे जाना पड़ेगा और वहाँ उन्हें ध्यान में रखना चाहिए कि मूल हकीकत इस प्रकार है, बिगिनिंग इससे है। और वे लोग भी एक्सेप्ट करेंगे कि बुद्धि से ऊपर भी कुछ है, कि जहाँ बुद्धि नहीं पहुँच सकती।

अणु का छोटे से छोटा हिस्सा ही परमाणु

प्रश्नकर्ता : ये साइन्टिस्ट जिन्हें 'ऐटम्स' और 'इलेक्ट्रॉन्स' कहते हैं, वह सूक्ष्मता किस हद तक की कहलाती है?

दादाश्री : वह सब स्थूल में जाता है। वैज्ञानिकों ने जितनी-जितनी खोज की हैं, वे सभी स्थूल में कही जाएगी।

प्रश्नकर्ता : जब से इन लोगों ने एटोमिक बम बनाया है न, तब जड़ वस्तु में से इन्होंने पूरी शक्ति पैदा की है।

दादाश्री : जड़ में तो बहुत शक्ति है, चेतन से भी अधिक शक्ति। जड़ तो जगत् को भस्मीभूत कर डाले उतनी शक्तिवाला है। उसमें सिर्फ *लागणी* (लगाव) मनोभाव नहीं है। अणु का उपयोग किया है उन लोगों ने।

प्रश्नकर्ता : मेटर में इलेक्ट्रोन, न्यूट्रोन और प्रोटोन?

दादाश्री : वे सभी जड़ हैं।

प्रश्नकर्ता : विज्ञान में ये एटम्स हैं जिन्हें हम इलेक्ट्रोन्स कहते हैं, वे उनके और एनर्ज़ी के बीच जो एक्ज़ेक्ट रिलेशन है, उसे लोग समझ नहीं सकते।

दादाश्री : परमाणु में एनर्ज़ी (शक्ति) नहीं है। परमाणु जब अणु बनते हैं तब वह एनर्ज़ी आती है। अणु का छोटे से छोटा हिस्सा, वह परमाणु है। परमाणु अविभाज्य होता है। इसलिए उसमें शक्ति नहीं है, अविभाज्य में। जिसका विभाजन हो सकता है, उसमें शक्ति है। अत: अणु भाज्य हो सकता है, विभाज्य होता है वह। जैसे-जैसे स्कंध बनता जाता है, वैसे-वैसे उसका विभाजन संभव है।

प्रश्नकर्ता : पदार्थ के रूप में यह जो कुछ भी दिखाई देता है वह अणु और परमाणुओं का बना हुआ है, यह बात सत्य है न? प्रत्येक पदार्थ में जो अनात्मा है, वह मूलभूत प्रकार से अणु-परमाणु तो हैं ही न?

दादाश्री : हाँ, हैं न!

परमाणु में है स्वाभाविक शक्ति

प्रश्नकर्ता : अणु-परमाणु में भी अभी

इलेक्ट्रोन-प्रोटोन की बात आ गई है। उनमें भी अलग नए तत्व हैं और उनमें शक्ति है, तो क्या वे चेतन रूपी हैं?

दादाश्री : नहीं, नहीं, उसकी वह शक्ति अलग है। चेतन शक्ति नहीं है किसी में भी। शक्ति हर एक में है, अलग-अलग है। शक्ति तो होती ही है, उसमें शक्ति तो है। उन अणु-परमाणुओं की कितनी सारी शक्ति है कि आत्मा से छूटा नहीं जा सकता, देखो न!

इन अणुओं में कितनी सारी शक्ति है कि, जो दुनिया का संपूर्ण नाश कर दे! दो परमाणु इकट्ठे होते हैं, तीन इकट्ठे होते हैं, इनके तो इकट्ठे होने से शक्ति (अद्रश्य रूप से) उत्पन्न होती है!

प्रश्नकर्ता : ये जो छः तत्व हैं, उनमें से फिज़िकल शक्ति किसमें है?

दादाश्री : ये जो है वह, अणु-परमाणु में, *पुद्गल* में। परमाणु के इकट्ठे होने से सारी शक्ति उत्पन्न हुई है। वह खुद बहुत शक्तिवाला है।

प्रश्नकर्ता : परमाणु इकट्ठे होते हैं, उससे फिर शक्ति आती है क्या?

दादाश्री : अणु को तोड़ने से शक्ति आती है, व्यक्त होती है।

प्रश्नकर्ता : तो जब परमाणु इकट्ठे करें तब...

दादाश्री : जब इकट्ठे होते हैं तब शक्ति नहीं आती, तोड़ें तभी शक्ति आती है। तोड़ने से शक्ति उत्पन्न होती है।

प्रश्नकर्ता : अब जो अभी बात चल रही है, उन परमाणुओं में भी शक्ति है?

दादाश्री : परमाणु में (खुद की स्वााविक) शक्ति तो है न, लेकिन परमाणु अविभाज्य होता है, इसलिए (उसकी) शक्ति बदलती नहीं।

परमाणुओं में बहुत शक्ति, ज़बरदस्त शक्ति है। और हम (कर्म) चार्ज करते हैं उसमें अपनी शक्ति नहीं है, केवल भाव ही है। अपना सिर्फ पावर ही पैठता है। परमाणु की खुद की शक्ति से ही है।

नहीं दिखते परमाणु किसी उपकरण से

प्रश्नकर्ता : परमाणु एक है या अनेक?

दादाश्री : परमाणु अनंत हैं, लेकिन खुद एक-एक को अलग कर सकता है। अलग किए उन्हें परमाणु कहते हैं। अतः अनंत हैं ऐसे।

प्रश्नकर्ता : मुझे यह जानना है कि एक परमाणु में से अनेक परमाणु बने हैं क्या?

दादाश्री : कोई भी किसी में से बना ही नहीं है। किसी को किसी से लेना-देना है ही नहीं। एक में से अनेक नहीं बने हैं और अनेक में से एक भी नहीं बना है। अपने-अपने स्वभाव में हैं। अतः इसमें कोई कुछ करनेवाला है ही नहीं। सिर्फ ये इन संयोगों के आधार पर दो परमाणु चिपक जाते हैं, तीन चिपक जाते हैं, चौथा चिपक जाता है और किसी भी साधन से दिखने लगे तो, उसे लोग अणु कहते हैं। और जो किसी भी साधन से दिखाई नहीं दे, वही परमाणु है।

एक परमाणु में जो गुण हैं, वैसे ही गुण अन्य सभी में हैं। कोई भी इस (पदार्थ) में से यह (अणु) नहीं बने हैं या उस (अणु) में से यह (परमाणु) नहीं बने हैं। यदि बने हैं ऐसा कहा जाए न, तो वहाँ कुछ क्रिएशन (निर्माण) है। तत्वों का क्रिएशन इस जगत् में है नहीं। इस जगत् में जो भी क्रिएशन है वह सारा सिर्फ मेनमेड (मानव सर्जित) ही है। फिर घड़े-वड़े, मकान-वकान सभी क्रिएशन। ये सब तो अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं, निमित्त द्वारा। ये बादल क्रिएशन नहीं बल्कि अवस्था है।

थ्योरी से नहीं समझी जा सकती, परमाणु की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : ये जो परमाणु हैं, उन्हें किसने खोज निकाला?

दादाश्री : खोजा तीर्थंकरों ने और ज्ञानियों को समझ में आ गया। उन्होंने जो देखा है, वह इनकी समझ में आ गया।

प्रश्नकर्ता : क्या परमाणु, बड़े साइन्टिस्टों से

डिस्कवर (खोज) नहीं हो पाएगा (खोज नहीं कर पाएँगे), जिस प्रकार छोटे एटम्स की खोज की है?

दादाश्री : हाँ, एटम मिलते हैं, एटम दिखता है। लेकिन उन्हें ऐसा विश्वास है कि इस अणु का विभाजन कर रहे हैं वे टुकड़े हो सकते हैं, अत: ऐसी शंका रहती है कि कोई ऐसी अविभाज्य वस्तु होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इन साइन्टिस्टों को परमाणु दिखते नहीं हैं, लेकिन शायद वे ऐसा कहेंगे कि परमाणु जैसी चीज़ है।

दादाश्री : हाँ, यानी वे चाहे परमाणु नहीं बोलें लेकिन समझ जाएँगे कि यह विभाज्य है अत: (आगे) अविभाज्य भी होना ही चाहिए। इसके सामनेवाला किनारा होना चाहिए। हर एक चीज़ का सामनेवाला किनारा होता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, एटम के बाद के जो छोटे पार्टिकल्स हैं, उसे ये लोग इंग्लिश (अंग्रेजी) में सबएटोमिक पार्टिकल्स कहते हैं। वहाँ तक ये लोग पहुँच सके हैं।

दादाश्री : बस, उससे आगे नहीं जा सकेंगे। परमाणु दिखाई दें, तभी आप अलग कर सकेंगे न! बुद्धि से, आँख से नहीं दिखाई देंगे। इन्द्रियगम्य होंगे, तब दिखेंगे न! इसे आपको लगभग वहाँ से बंद रखना पड़ेगा। क्योंकि मूल वस्तु तो दिखाई दे ऐसी है नहीं। वह सिर्फ ज्ञानियों को ही समझ में आ सकती है। वह भी केवलज्ञान में भी अभी कुछ समय बाद जान पाऊँगा। हम भी (वह) केवलज्ञान से देख नहीं सकते हैं लेकिन केवलज्ञान की बात हमें समझ में आ गई है।

केवलज्ञानी अर्थात् जो एब्सोल्यूट (संपूर्ण) हो गए हों, संपूर्ण एब्सोल्यूट। मैं भी एब्सोल्यूट हो चुका हूँ लेकिन यह संपूर्णता नहीं है। यदि संपूर्ण एब्सोल्यूट हो जाए तब वह संपूर्ण जान सकता है कि यह क्या है!

ज्ञानी देखें *पुद्‌गल* परमाणु की करामात

प्रश्नकर्ता : हर एक परमाणु में उसकी खुद की ही शक्ति है न?

दादाश्री : हाँ, शक्ति है ही, और अंदर ऐसी शक्तिवाला जो है, वह एक ही तत्व है। वह है यह रूपी दिखनेवाला *पुद्‌गल* परमाणु। वह स्वयं कार्यशील है।

पुद्‌गल करामात बहुत ही सूक्ष्म बात है। वह समझ में आ सके, ऐसी नहीं है। यहाँ बैठे-बैठे मुझे हर एक *पुद्‌गल* की करामातें दिखती हैं। हमने जो देखा है और जो जाना है वह अपूर्व है। मैं उदाहरण देता हूँ। यहाँ सभी लोग बैठे हों तब किसी को भी छींकने की इच्छा नहीं होती लेकिन जब वहाँ अंदर छौंक लगाया जाए तब सभी छींकने लगते हैं। तो अगर तू कर्ता है, तो बंद कर दे न छींकें! लेकिन बंद नहीं होतीं। वह *पुद्‌गल* की करामात है। फिर कोई कहेगा, '*पुद्‌गल* का कर्तापन दिखाईए।'

बहन दरवाज़ा बंद करके छौंक लगा रही हो, उनकी इच्छा नहीं है और लोगों की भी इच्छा नहीं है लेकिन फिर भी खाँसी करवाती है न लोगों को! फिर कहता है, 'मैं खाँसा।' यह सारा इगोइज़म (अहंकार) है।

पुद्‌गल, परमाणु के रूप में अविनाशी

इस जगत् में परमाणु तो जहाँ तहाँ सभी जगह हैं। पूरा जगत् परमाणुओं से ही भरा हुआ है। एक एक परमाणु कर के पूरा जगत् बना हुआ है। एक एक परमाणु का नियम है। अत: यह जगत् गप्प नहीं है।

इन आँखों से सब दिखाई देता है, कानों से सुनाई देता है, ये इन्द्रियों से जो अनुभव में आता है, वे सभी रूपी तत्व हैं। वे मूल रूप से अविनाशी हैं और अवस्था के रूप में विनाशी हैं। परमाणु के रूप में अविनाशी है और अणु के रूप में यह सब जो दिखाई देता है, वह विनाशी है। केवल यही एक तत्व ऐसा रूपी है कि दिखाई दे। और इसमें भी मूल तत्व तो दिखाई पड़े ऐसा नहीं है। ये सिर्फ उसकी अवस्थाएँ ही दिखाई देती हैं। जड़ रूपी है और चेतन अरूपी है। इसलिए यह जड़ पहचान जा सकता हैं और चेतन पहचाना नहीं जा सकता। इन आँखों से नहीं पहचाना जा सकता, वह तो दिव्यचक्षु से ही पहचाना जा सकता है।

देह में समाए विविध परमाणु

प्रश्नकर्ता : क्रोध-मान-माया-लोभ के परमाणुओं की वैज्ञानिक समझ क्या है?

दादाश्री : देह परमाणुओं से बनी हुई है)। इस शरीर में हॉट परमाणु भी भरकर लाए हैं और कोल्ड परमाणु भी भरकर लाए हैं। इसके अलावा आकर्षणवाले परमाणु भी भरकर लाए हैं और विकर्षणवाले परमाणु भी भरकर लाए हैं। लोभ, आकर्षणवाले परमाणु से उत्पन्न होता है। अत: ऐसे सभी प्रकार के परमाणुओं से बना है पूरा जगत्।

अत: जब क्रोध होनेवाला हो न, तब अंदर क्रोधक नामक जो मशीन होती है, वह शुरू हो जाती है। वही क्रोध करवाती है। उस घड़ी सभी उग्र परमाणु लाल, लाल, लाल, लाल, हो जाते हैं। मशीन रेज़ (गति पकड़ना) हो गई हो ऐसा लगता है। हमें महसूस होता है कि यह मशीन रेज़ हो गई। अब यदि चेकनट दबाओ तो उस घड़ी चेकनट नहीं चलता। यदि फौज़दार भी उसे डंडे लगाए तब भी अंदर क्रोध सुलगता रहता है उसका। डंडा लगाने पर बाहर से बंद हो जाता है लेकिन अंदर तो क्रोध सुलगता ही रहता है।

अत: ये सब क्रोध-मान-माया-लोभ के परमाणुओं का बना हुआ है। और उसका इफेक्ट होता रहता है। मन इफेक्टिव है, वाणी इफेक्टिव है और बॉडी भी इफेक्टिव है, और उसमें (व्यवहार) आत्मा को खुद के स्वरूप का भान नहीं होने की वजह से उसे ऐसा लगता है कि मुझे ही यह इफेक्ट हो रहा है। ऐसा मानकर उसी में रमणता करते हैं ये सभी लोग। परमाणु तो, उनके अपने गुण में ही रमणता कर रहे हैं। इसमें खुद को ऐसा लगता है कि यह मुझ से चिपट गया है। जब आप शुद्धात्मा बन जाते हो तब उसके बाद पता चलता है कि यह तो पराई चीज़ है, बाहर हो रहा है।

परमाणुओं का स्थूल से सूक्ष्मतम का साइन्स

प्रश्नकर्ता : परमाणु जो स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम, इन सभी की बाउन्ड्री कौन सी हैं?

दादाश्री : स्थूल तो जो, इन सभी डॉक्टरों को दिखाई देता है, वह। सबसे बड़े दूरबीन (माइक्रोस्कोप) से दिखाई देता है।

जो परमाणु शुद्ध हैं, विश्रसा, वे सूक्ष्मतम।

जो परमाणु प्रयोगसा हैं वे सूक्ष्मतर। प्रयोगसा ही कारण देह है।

जो परमाणु मिश्रसा हैं वे सूक्ष्म हैं, वही प्रतिष्ठित आत्मा है।

मन भी परमाणुओं का बना हुआ है। अभिप्राय मतलब अहंकार। वह अहंकार के परमाणुओं का बना हुआ है।

परमाणु हैं सूक्ष्म और अविनाशी

प्रश्नकर्ता : किसी शव को चिता पर रखने से स्थूल बॉडी तो जल जाती है, लेकिन सूक्ष्म बॉडी (परमाणु) तो तुरंत निकल जाएगी न?

दादाश्री : परमाणु जलते ही नहीं हैं न! वे परमाणु तो इतने अधिक सूक्ष्म हैं कि यह अग्नि जो है वह स्थूल है इसलिए इन परमाणुओं पर कोई असर नहीं डाल सकती। तीनों शरीर *पुद्गल* हैं। (१) स्थूल देह (२) सूक्ष्म देह (३) कारण देह। सारे ही गुनाह सूक्ष्म देह के हैं। उनकी वजह से देह परमाणु खींचती है। ये स्थूल देह के परमाणु जलने के लिए आए हैं, सूक्ष्म देह जलने के लिए नहीं आया है। उससे कारण देह उत्पन्न होती है। इसी वजह से कार्य उत्पन्न होते हैं।

प्रश्नकर्ता : कारण देह के परमाणु शरीर में कहाँ होते हैं?

दादाश्री : कारण देह तो पूरे शरीर में भरा हुआ होता है, वह परमाणु के रूप में होता है। उन परमाणु से फिर कार्य देह बनता है। यह परमाणु सूक्ष्म में होते हैं, फिर अगले जन्म के लिए इफेक्टिव बॉडी (कारण देह) बनती है।

कारण में से ही कार्य होता है। कारण देह बरगद के बीज जैसा है। जिस प्रकार उस बीज में

वह पूरा बरगद का पेड़ होता है, उसी प्रकार इस देह में कारण देह है।

इस बड़ के बीज में चेतन भी है और पूरा बरगद का पेड़ भी है। पत्ते वगैरह सभी कुछ बीज में है। सभी कुछ कॉम्पेक्ट रूप में है। बाह्य साधन इकट्ठे होते ही, प्रकट हो जाता है। पेड़ कहाँ से टेढ़ा होगा वह बीज के अंदर ही चित्रित है।

कारण शरीर ही चार्ज परमाणु हैं

प्रश्नकर्ता : अब वह चार्ज हुए परमाणु जो हैं, वही कारण देह है कारण देह, प्रयोगसा और कॉज़ल बॉडी एक ही हैं?

दादाश्री : हाँ, कारण शरीर मतलब चार्ज हुए परमाणु, वही कॉज़ल बॉडी। कॉज़ल बॉडी आत्मा के साथ-साथ आती है।

प्रश्नकर्ता : और फिर जन्म होते ही डिस्चार्ज होना शुरू हो जाता है?

दादाश्री : नहीं। यह अंदर गर्भ में आया तभी इफेक्टिव बॉडी बनने की शुरूआत हो जाती है। और वह जन्म होने तक पूरी इफेक्टिव बॉडी बनकर तैयार हो जाती है। अब बॉडी होती तो है छोटी, लेकिन उसमें पूरी ज़िंदगी के सभी इफेक्ट उस इतने से में रहते हैं। अत: जैसे-जैसे बाहर संजोग मिलेंगे, वैसे-वैसे इफेक्ट फल देते जाएँगे।

कारण शरीर, वही प्रयोगसा

प्रश्नकर्ता : कार्मण शरीर जो है वह किस प्रकार जाता है? उसका आकार है क्या?

दादाश्री : वह प्रयोगसा परमाणुओं के रूप में जाता है। ये कार्मण शरीर प्रयोगसा परमाणु हैं, अन्य कुछ नहीं। जब उसका उदय आता है तब मिश्रसा कहलाते हैं। प्रयोगसा कर्म कहलाता है और मिश्रसा *भोगवटा* (सुख या दु:ख का असर) कहलाता है। प्रयोगसा पिछले जन्म में इकट्ठे किए होते हैं, वे शरीर के अंदर होते हैं और उसके आधार पर इस जन्म में सारे मिश्रसा (परमाणु) फल देते हैं।

प्रश्नकर्ता : खिंचने के बाद फिर वापस प्रयोगसा होते हैं क्या?

दादाश्री : मिश्रसा जब फल देता है तब, जब वह कड़वा लगे न, तब हम किसी पर चिढ़ जाते हैं, तो उस घड़ी वापस प्रयोगसा उत्पन्न होता है और अगर खुश हो जाते हैं तब भी प्रयोगसा होता है। वे जो प्रयोगसा हुए न, वे छूटते वक्त मिश्रसा फल देकर जाते हैं, इसी को संसार फल कहते हैं।

प्रयोगसा जो है, मतलब जिसका आयोजन हो चुका है। फिर वह बनता है मिश्रसा। वही अब रूपक में आता है। और रूपक में आए हुए का हम अनुभव करते हैं और फिर पूरे जगत् में, जीवमात्र में वही निर्जरा होती रहती है।

प्रयोगसा, वह अवस्थित है और मिश्रसा वह व्यवस्थित है। अवस्थित फिर रूपक में आता है। मिश्रसा जो फल देता है, वह व्यवस्थित के नियमों के आधार पर देता है। वह जब निर्जरा होते हैं तब वापस जैसे थे वैसे के वैसे विश्रसा हो जाते हैं। इस प्रकार प्रयोगसा-मिश्रसा-विश्रसा का चक्र चलता ही रहता है।

प्रयोगसा मतलब जब (व्यवहार) आत्मा तन्मय होता है, तब जिन परमाणुओं का प्रयोग होता है, वह अवस्था। प्रयोगसा बदला जा सकता है। जैसे कि, पत्र लिखा और पोस्ट करने जाएँ उन दोनों के बीच जो समय मिलता है उसमें यदि उसे पत्र पोस्ट नहीं करना हो तो नहीं करता। उसी प्रकार प्रयोगसा जो है वह मिश्रसा में परिणमित हो उससे पहले, यदि उसे जागृति आ जाए तो वापस बदल सकता है। और एकबार यदि मिश्रसा हो जाएँ, फिर तो वे अवश्य ही फलित होंगे। फिर उसे नहीं बदला जा सकता। परमाणु चार्ज होने के बाद अंदर पड़े रहते हैं। जब तक वे प्रयोगसा फल देकर नहीं जाते, तब तक की उसकी अवस्था मिश्रसा कहलाती है। मिश्रसा परमाणु फल देकर शुद्ध होकर विश्रसा में परिणमित होते हैं।

वे प्रयोगसा परमाणु हम पर असर नहीं डालते। वे परमाणु, जब अंदर कॉज़ेज़ हो रहे होते हैं, तब प्रयोगसा होने पर अंदर रहते हैं। फिर जब असर देने

लायक हो जाते हैं और असर देने के लिए बाहर आते हैं तब उदय कर्म के रूप में आते हैं, तब वे मिश्रसा कहलाते हैं। इससे तो कोई भी नहीं बच सकता। प्रयोगसा को बदला जा सकता है। हमारे पास आए न, तो हम बदलाव कर देंगे। मिश्रसा तो भगवान से भी नहीं हटाए जा सकते। जो जमकर पक्का हो चुका है, ऐसे उदयकर्म में तो और कोई चारा ही नहीं है न! और कड़वे-मीठे उदयकर्म भुगत लेने पर जो परमाणु झड़ (अलग) हो जाते हैं, वे परमाणु विश्रसा हैं, प्योर।

परमाणुओं की अवस्था कौन-कौन सी?

पूरा जगत् *पुद्गल* परमाणुओं से भरा हुआ है। शुद्ध स्वरूप में रहे हुए परमाणुओं को तीर्थंकर भगवान ने 'विश्रसा' कहा है। अब संयोगों के दबाव से किसी पर गुस्सा आ जाए, तब उस समय 'मैं चंदूलाल हूँ और मैंने यह किया' ऐसा जो ज्ञान है, उसके कारण बाहर के परमाणु खिंचते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो भ्रांति से आत्मा *पुद्गल* की अवस्था में तन्मयाकार हो जाता है। उन भास्यमान परिणामों को खुद के मानता है, उससे परमाणु 'चार्ज' होते हैं। प्रयोग हुआ इसलिए इसे प्रयोगसा कहा जाता है। यह प्रयोगसा 'कॉज़ल बॉडी' के रूप में रहता है। वह अगले जन्म में फिर मिश्रसा बन जाता है। अर्थात् इफेक्टिव बॉडी बन जाता है। अब 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स' के आधार पर जब यह प्रयोगसा परमाणु डिस्चार्ज होते हैं, तब कड़वे-मीठे फल देकर जाते हैं, उस समय वे मिश्रसा कहलाते हैं। डिस्चार्ज हो जाने के बाद में वापस शुद्ध होकर विश्रसा हो जाते हैं।

दान देते समय 'मैं दान दे रहा हूँ' ऐसा भाव रहता है, उस समय पुण्य के परमाणु खिंचते हैं और खराब काम करते समय पाप के खिंचते हैं। वे फिर फल देते समय *शाता* (सुख परिणाम) फल देते हैं या *अशाता* (दु:ख परिणाम) फल देते हैं। जब तक अज्ञानी है तब तक फल भोगता है, सुख-दु:ख भोगता है, जबकि ज्ञानी इसे भोगते नहीं हैं, सिर्फ 'जानते' ही हैं।

प्रश्नकर्ता : जब बाहर रहते हैं, तब तक चेतनभाव सहित होते हैं या अंदर घुसने के बाद?

दादाश्री : जब तक बाहर हैं, तब तक विश्रसा परमाणु कहलाते हैं। अंदर घुसने के बाद वे प्रयोगसा, और जब फल देते हैं तब मिश्रसा कहलाते हैं।

समभाव से *निकाल* करने पर मिश्रसा बनें विश्रसा

पुद्गल अवस्था में आत्मा अज्ञानभाव से अवस्थित हुआ, वह प्रयोगसा है। बाद में 'व्यवस्थित' उसका फल देता है, तब मिश्रसा कहलाता है। प्रयोगसा होने के बाद में फल देना व्यवस्थित के ताबे में चला जाता है। फिर टाइमिंग, क्षेत्र, इन सभी 'साइन्टिफिक सरमकस्टेन्शियल एविडन्स' के मिलने पर रूपक में आता है। 'स्वरूप का ज्ञान' हो जाए तो खुद इस *पुद्गल* की करामात में तन्मयाकार नहीं होता, अत: नया प्रयोगसा नहीं होता। जो पुराने हैं, उनका समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना बाकी बचता है।

फाईलों का समभाव से *निकाल* करने पर परमाणु शुद्ध हो जाते हैं। उस वक्त 'शुद्धात्मा' देखते हो, इसलिए परमाणु शुद्ध हो जाते हैं। ये परमाणु तो निरंतर निकलते ही रहेंगे, फिर भी यदि शुद्ध होकर जाएँगे तो फिर दुबारा मुकदमा दायर नहीं करेंगे। तब फिर जब परमाणु, परमाणु में सेटअप हो जाएँ और आत्मा, आत्मा में सेटअप हो जाए, तब मोक्ष कहलाता है। तब फिर से बंधन में आने का प्रश्न ही नहीं उठता। एक बार अबंध हो चुकी वस्तु को कोई बंधन नहीं रहता।

अब आपको क्या करना है कि यदि आपको कोई दो गालियाँ दे दे तो आपको उसका समभाव से *निकाल* कर देना चाहिए। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उनके शुद्धात्मा देखकर समभाव से *निकाल* करोगे तो वे परमाणु जो मिश्रसा थे, वे वापस विश्रसा हो जाएँगे।

प्रयोगसा - मिश्रसा - विश्रसा

प्रश्नकर्ता : दादा, यह प्रयोगसा, मिश्रसा, और विश्रसा इन्हें ब्यौरेवार उदाहरण देकर समझाइए न।

दादाश्री : अब इस मिश्रसा में तो पूरा ही जगत् है। मिश्रसा मतलब क्या? जन्म से लेकर स्माशान

में जाने तक मिश्रसा है। उसमें से और क्या उत्पन्न होता है? तो वह यह कि फिर से, दूसरा प्रयोगसा उत्पन्न हो जाता है। यह अभी जो प्रयोगसा उत्पन्न हो जाए, तो वह अगले जन्म में मिश्रसा बनता है। और यह मिश्रसा तो हमेशा भुगतता ही रहता है। *भोगवटा* (सुख या दु:ख का असर) मिश्रसा का है। नया बंध पड़े बगैर अब अगर मिश्रसा में से यदि विश्रसा हो जाए तो छूट सकते हैं वर्ना नहीं छूटा जा सकता।

प्रकृति चेतन भाव को प्राप्त है, मिश्रचेतन है। 'मिश्रचेतन' यानी क्या कि ये जो सब इस प्रकृति के परमाणु हैं, इन्हें 'मिश्रसा' कहा जाता है। 'मिश्रसा' जब रस देकर जाता है, तब उसे 'विश्रसा' कहते हैं। शुद्ध परमाणुओं को 'विश्रसा' कहा जाता है और उनमें भाव किए, उस समय 'प्रयोगसा' हो गए।

ये प्रयोगसा पिछले जन्म में किए होते हैं। वह प्रयोगसा जब वहाँ साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स में जाता है तब मिश्रसा बनकर यहाँ आता है। मिश्रसा इस अवतार में भुगतने हैं।

शुद्ध *पुद्‌गल* परमाणु, वही विश्रसा

प्रश्नकर्ता : विश्रसा अर्थात् क्या? विश्रसा परमाणुओं का आकर्षण किस प्रकार होता है?

दादाश्री : यह तीर्थंकरों का शब्द है। ये देखने में तो बहुत बड़े शब्द लगते हैं लेकिन लोगों को समझ में नहीं आते। ऐसे तीन शब्द हैं। जिस प्रकार चंदूसा होता है न! अपने यहाँ लिखवाते हैं न, चंदूसा मतलब? इसी प्रकार प्रयोगसा, फिर मिश्रसा और तीसरा विश्रसा। तीर्थंकर भगवंतों ने बहुत सुंदर बात कही है लेकिन वह समझ में नहीं आता तो उसमें वे क्या करें? अक्कल लड़ाते हैं आमने-सामने। उसे तो ज्ञानी के माध्यम से समझ लेना चाहिए। अब पहले कौन सा शब्द आया?

प्रश्नकर्ता : विश्रसा।

दादाश्री : यह पूरा जगत् *पुद्‌गल* परमाणुओं से भरा हुआ है। वे बिल्कुल शुद्ध परमाणु हैं, वे अणु नहीं हैं। आँखों से दिखाई नहीं देतें, दूरबीन से भी दिखाई नहीं देते। वे सिर्फ ज्ञानगम्य हैं। वह चीज़ अन्य किसी से गम्य नहीं है। वे परमाणु जब इकट्‌ठे होते हैं तब अणु बनता है।

उन्हें *पुद्‌गल* परमाणु नाम दिया है न, लेकिन वे वास्तव में वे *पुद्‌गल* नहीं होते बेचारे। वे तो विश्रसा परमाणु हैं। केवल ये ही *पूरण-गलन* (चार्ज होना, डिस्चार्ज होना) नहीं होते। लेकिन उनका मूल स्वभाव ऐसा है कि सब इकट्‌ठे हो जाते हैं। फिर उनके बड़े-बड़े स्कंध (समूह) बनते हैं, उसके बाद बिखर जाते हैं। पूरे जगत् के शुद्ध *पुद्‌गल* परमाणुओं को तीर्थंकर 'विश्रसा' कहते हैं। विश्रसा यानी जो बिल्कुल शुद्ध हैं। सारे परमाणु मिलकर जब अणु बन जाते हैं, तब भी उनकी शुद्धता चली नहीं जाती। अत: यह पूरा जगत् इन विश्रसा परमाणुओं से खचाखच भर हुआ है।

विश्रसा स्वाभाविक है। उसका *पुदगल* नहीं होता। वह अगुरु-अलघु होता है। यह जो विकृत *पुद्‌गल* है, विकारी *पुद्‌गल,* जिसमें से खून-मवाद वगैरह सब निकलता है वह मिश्रसा है। वह *पुद्‌गल* गुरु-लघुवाला होता है।

कषायों से विश्रसा परमाणु बन जाते हैं प्रयोगसा

प्रश्नकर्ता : क्या क्रोध-मान-माया-लोभ मिश्रसा और विश्रसा परमाणुओं के कारण होते हैं? यदि अंदर मिश्रसा परमाणु हैं तो फिर विश्रसा परमाणुओं का आकर्षण किस प्रकार होता है?

दादाश्री : विश्रसा अर्थात् बाहर जो सभी शुद्ध परमाणु हैं, आकाश में, खुली जगहों पर सर्वत्र रहे हुए हैं, वे विश्रसा कहलाते हैं। तो जब क्रोध-मान करे, गुस्सा करे, तब तुरंत ही अंदर घुस जाते हैं। अंदर प्रयोगसा बनकर घुसते हैं। घुसते समय प्रयोगसा हो जाते हैं। क्रोध-मान-माया-लोभ किया कि तुरंत प्रयोगसा बन जाते हैं। और प्रयोगसा होने के बाद अगले जन्म में मिश्रसा अर्थात् फिर शरीर-वरीर वगैरह बनने के बाद फल देते हैं। फल देते समय वापस विश्रसा बनकर निकल जाते हैं।

अब वह अज्ञानी इंसान 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा

मानकर, ज़रा सा भी खराब विचार करे कि तुरंत ही उसके साथ परमाणु अंदर घुस जाते हैं। बाहर तो ये परमाणु शुद्ध ही हैं, विश्रसा ही हैं, लेकिन वह एक खराब विचार आया कि तुरंत ही वे परमाणु खिंच जाते हैं, उस समय वे प्रयोगसा बनकर अंदर घुस जाते हैं अपने भाव करते ही तुरंत ही, वे घुसते हैं अंदर। भाव नहीं करें तो नहीं घुसेंगे। परमाणु अंदर घुसें तब वे विश्रसा से प्रयोगसा बन जाते हैं। अर्थात् प्रयोग में दाखिल होते हैं, लेबोरेटरी में आ गए।

प्रश्नकर्ता : वे प्रयोगसा परमाणु पूरी बॉडी द्वारा खींचे जाते हैं न?

दादाश्री : प्रयोगसा तो, अंदर जाने के बाद प्रयोगसा शुरु होता है, उसके परिणाम के रूप में।

प्रश्नकर्ता : जब अंदर जाते हैं। तब वे कहाँ से होकर जाते हैं?

दादाश्री : इन इन्द्रियों से होकर। मनुष्य को जब क्रोध आता है तब वह नाक द्वारा परमाणु खींचता है, वह प्रयोगसा है। सबसे पहले प्रयोगसा होता है। गुस्सा करते ही तुरंत परमाणु अंदर खिंच जाते हैं। कितने ही लोगों में नाक और मुँह द्वारा खिंचते हैं और कितनों में तो हाथों-पैरों वगैरह सभी जगह से खिंचते हैं। यों-यों होने लगता है, और हाथ-पैर आदि हर एक जगह से खिंचते हैं। ऐसे-ऐसे काँपने लगता है कोई-कोई तो।

इलेक्ट्रिकल बॉडी से चार्ज होते हैं परमाणु

प्रश्नकर्ता : दादा, वे शुद्ध परमाणु तो सारे एक सरीखे ही हैं न?

दादाश्री : शुद्ध परमाणुओं में कोई फर्क नहीं है खिंचने के साथ ही वह प्रयोगसा में चला जाता है। प्रयोगसा में गया तो ये सभी क्रोध के परमाणु बन गए। और वे जो क्रोध परमाणु बने, तो वे अगले जन्म में वापस उतना ही क्रोध करवाते हैं फिर।

प्रश्नकर्ता : अंदर जब क्रोध आया तब जो परमाणु खिंच गए, वे शुद्ध परमाणु थे। जब उसमें कुछ प्रकिया हुई, तो किसी अन्य प्रकार से परमाणु में फर्क आया होगा न? उसके साथ इलेक्ट्रिकल चार्ज अथवा किसी भी तरह का चार्ज खिंचता होगा न साथ में?

दादाश्री : क्रोध आए न, तभी से उन परमाणु पर रंग चिपक जाता है क्रोध का और जहाँ पर अहंकार आए, वहाँ पर परमाणु अहंकारवाले हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब, अहंकार के सारे परमाणु अलग रहते हैं? अहंकार के परमाणु अलग, क्रोध के परमाणु अलग, ऐसा?

दादाश्री : हाँ, सभी अलग-अलग। वे ही फल देते हैं वापस। बाहर ये परमाणु एक ही तरह के हैं। हम जैसा करते हैं, ये परमाणु वैसे ही बन जाते हैं। हम सीना तानें, तो सारे परमाणु मानवाले हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, इसका अर्थ यह हुआ कि परमाणु जब अंदर खिंचते हैं उस वक्त उन परमाणु में कुछ फर्क पड़ता है?

दादाश्री : फर्क पड़ता है इसीलिए प्रयोगसा बने।

प्रश्नकर्ता : जैसा अभी यह कहते हैं कि सभी परमाणुओं में चार्ज होता है, इलेक्ट्रिकल चार्ज। तो इनमें भी वैसा चार्ज होता है क्या?

दादाश्री : हाँ, वे चार्ज ही हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : ऐसा वह चार्ज कहाँ से आता है?

दादाश्री : अंदर इलेक्ट्रिकल बॉडी है, उस इलेक्ट्रिकल बॉड़ी की बजह से ही सब चार्ज हो जाता है। लेकिन क्रोध किया तो वापस क्रोध के दूसरे परमाणु उत्पन्न हो जाते हैं। लोभ किया तो लोभ के परमाणु, मान किया तो मान के परमाणु, ऐसे सारे परमाणु उत्पन्न होते रहते हैं, बीज डालते हैं।

प्रयोगसा बहुत सूक्ष्म होता है। जबकि मिश्रसा स्थूल होते हैं।

भीतर के भावों से बदला परमाणु का रूप

प्रश्नकर्ता : अत: उसका चार्ज तो अंदर से

ही आता है न? उसके परमाणु खिंचने के बाद अंदर चार्ज होता है न?

दादाश्री : वे चार्ज होकर ही अंदर घुसते हैं। यहाँ घुसते वक्त भीतर से चार्ज हो ही जाते हैं, बाहर चार्ज नहीं होते। अपने शरीर में ज़रा ऐसे खिंचाव होता है उससे, क्रोध से खिंचता है, और यदि खींचने के लिए साधन नहीं हो तो हाथ कांपते हैं, पैर भी कांपते हैं, सब तरफ से काँपने लगता है। बाल खड़े हो जाते हैं और यहाँ से (सिर से) खिंचते हैं।

यह प्रयोगसा फिर दूसरे जन्म में मिश्रसा बनते हैं। ये मिश्रसा जब परिपक्व हो जाएँ तब फल देकर जाते हैं। अंदर हैं तो सही सभी।

प्रश्नकर्ता : जब फल देकर जाते होंगे तब क्या वापस नए बीज डालते हुए जाते हैं?

दादाश्री : नए बीज तो यदि आप 'मैं चंदूभाई हूँ' बनो तो आप डालोगे। अत: मन में तन्मयाकार हुआ कि नया बीज डल जाता है, वर्ना अगर तन्मयाकार नहीं हुआ तो बीज नहीं डलेगा।

वे जो विश्रसा परमाणु थे न, वे अभी प्रयोगसा परमाणु कहलाते हैं। खुद भाव बोला न, इसलिए परमाणु का रूप बदल गया। प्रयोगसा हो गए इसलिए अब यों ही वापस नहीं जाएँगे। प्रयोगसा परमाणु अपने आप स्वाभाविक रूप से ही मिश्रसा बन जाते हैं। और मिश्रसा बनने से यह बॉडी (शरीर) बनती है अपने आप। किसी को बनानी नहीं पड़ती वह अपने आप ही बनती है। प्रयोगसा बॉडी की रचना नहीं करता। प्रयोगसा जो है वह योजना पर निर्भर है और प्रयोगसा में से मिश्रसा बनकर शरीर बन जाती है, इसमें किसी का भी उपचार नहीं है।

कर्म और परमाणुओं की लिंक

प्रश्नकर्ता : मिश्रसा और प्रयोगसा, को द्रव्यकर्म और भावकर्म कहा जा सकता है?

दादाश्री : ऐसा है न, प्रयोगसा तो पहले ही हो जाता है। द्रव्यकर्म से पहले हो जाता है, बोलते ही हो जाता है। प्रयोगसा परमाणु शुद्ध थे, तो बोलना शुरु करते ही 'हमने', अंदर भाव किया और ऐसा करते ही अंदर परमाणु, प्रविष्ट हो जाते हैं। इससे सभी परमाणु रंग जाएँ, उस तरह से प्रयोगसा बन जाते हैं।

प्रयोगसा कहाँ तक कहे जा सकते हैं? ये शुद्ध मूल विश्रसा परमाणु हैं। जो कुछ बोलते ही भीतर प्रविष्ट हो जाते हैं और वे प्रयोगसा बन जाते हैं, फिर मिश्रसा बनने में देर लगती है। जब मिश्रसा बन जाए, तब वह द्रव्यकर्म कहलाते हैं। तब तक द्रव्यकर्म नहीं कहा जा सकता। मिश्रसा होते समय द्रव्यकर्म कहलाते हैं और द्रव्यकर्म बनने के बाद फिर उदय में आते हैं।

प्रश्नकर्ता : इन परमाणुओं का स्वभाव कैसा है?

दादाश्री : हर एक द्रव्य में अगुरु-लघु स्वभाव एक सामान्य गुण है। लेकिन प्रकृति, जो विकृत स्वभाववाली है, वह गुरु-लघु स्वभाववाली होती है। जगत् में जो शुद्ध परमाणु हैं, वे अगुरु-लघु स्वभाववाले हैं। मनुष्य जब भाव करता है तब परमाणु खिंचते हैं, तब प्रयोगसा कहलाता है। उसके बाद मिश्रसा हो जाता है। मिश्रसा फल देकर जाता है, उसके बाद वह वापस विश्रसा अर्थात् शुद्ध परमाणु बन जाते हैं। मिश्रसा और प्रयोगसा, वे गुरु-लघु स्वभाववाले हैं और विश्रसा परमाणु अगुरु-लघु स्वभाववाले हैं।

प्रश्नकर्ता : जीवन की अंतिम घड़ी के भाव के अनुसार *पुद्गल* पकड़ता है?

दादाश्री : तुरन्त ही पकड़ लेता है। यह जो भाव किया, वह भ्रांतिभाव है। स्वभावभाव नहीं है। मन के अंदर भ्रांतिभाव होने से तो वे परमाणु प्रयोगसा के बहाव में चले जाते हैं और जब परिणाम देते है, तब मिश्रसा हो जाते हैं। वे फिर कड़वे-मीठे परिणाम देकर जाते हैं। अभी यह देह मिश्रसा परमाणुओं से बनी हुई है। वे परिणाम देकर जाएँगे। आत्मा लक्ष्य में आए, स्वभावभाव में आए, तब नये बीज नहीं डलते हैं।

प्रयोगसा योजना, मिश्रसा फल

प्रश्नकर्ता : जो संयोग आते हैं, उन्हें यदि मिश्रसा में आने ही न दूँ तो...

दादाश्री : यदि प्रयोगसा में प्रविष्ट होने दिया

तो मिश्रसा में आए बगैर रहेंगे ही नहीं। जब प्रयोगसा ही नहीं होने दे तब (तो वहाँ मिश्रसा नहीं आएगा) और जब पिछले जन्म में प्रयोगसा होने के बाद, यह जन्म लेते हैं तब वे मिश्रसा हो जाते हैं। जब प्रयोगसा में से मिश्रसा बन जाते हैं, तब देह के रूप में दिखते हैं और फिर जब फल देकर जाते हैं तब वापस विश्रसा बन जाते हैं, उस समय हृदय में शुद्ध चरित्र (ज्ञाता-दृष्टा) आ गया तो शुद्ध विश्रसा उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् प्रयोगसा परमाणु में से मिश्रसा बनने में अपना कोई पुरुषार्थ है?

दादाश्री : नहीं, प्रयोगसा में से मिश्रसा बन ही जाते हैं, उसमें कोई पुरुषार्थ नहीं है। प्रयोगसा मतलब योजना के रूप में, मिश्रसा मतलब फल से संबंधित बात। योजना वे लोग (अज्ञानी) तय करते हैं। उसके बाद उसका (व्यवस्थित शक्ति) काम शुरू करती है, वही मिश्रसा है। मिश्रसा होने के बाद वापस कड़वे-मीठें फल देकर जाते हैं। जीव को कड़वा-मीठा भुगतना ही पड़ता है। अंदर कड़वाहट भी महसूस होती है और मिठास भी महसूस होती है। जब मिठास आती है तब कैसे मौज में आ जाता है, उसी प्रकार जब कड़वा टेस्ट आता है, तो वह भी एक प्रकार का टेस्ट ही है न?

अब मिश्रसा का जब ज्ञान से निकाल करता है, तब विश्रसा हो जाते हैं। जगत् के लोगों में भी मिश्रसा होते हैं जो बाद में फल देकर निर्जरा हो जाते हैं लेकिन अज्ञानता से वापस नए ग्रहण करता है। इस ज्ञान के बाद नए ग्रहण करना बंद है। उसका कारण यह है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसी प्रतीति है उसे। और 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसी प्रतीति चली गई है।

ज्ञान के बाद खींचनेवाला गया

प्रश्नकर्ता : प्रयोगसा अपने अंदर उत्पन्न ही नहीं हो, ऐसा कुछ करना हो तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : जिसने ज्ञान लिया है उनमें ऐसा ही कर दिया है न!

प्रश्नकर्ता : ज्ञान तो हमने लिया हुआ है, तो मुझे यह जानना है कि हमारी स्थिति क्या है? हमें ये प्रयोगसा मिलेंगे क्या? ज्ञान लेने के बाद जब मिश्रसा का उदय आए और वे कड़वे-मीठे फल दे रहे हों, तब हमारी क्या स्थिति मानी जाएगी?

दादाश्री : कड़वे फल आपसे सहन नहीं होते, इसलिए फिर आप उन पर चिढ़ जाते हो।

प्रश्नकर्ता : वास्तव में ऐसा ही होता है, हो जाता है।

दादाश्री : वह भी, वास्तव में आप नहीं चिढ़ते हो, आप तो शुद्धात्मा और ये चंदूभाई चिढ़ जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ चंदूभाई चिढ़ जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, अज्ञानदशा में वह चिढ़ जाता है, उस समय वापस परमाणु खींचता है। लेकिन ज्ञान लेने के बाद अब परमाणु खींचने की जो शक्ति थी, वह ताकत रही ही नहीं। क्योंकि खींचनेवाला गया, जुदा हो गया। इसलिए अब आपको क्या करना है? परमाणु खिंचते नहीं हैं, लेकिन आप वापस उसमें गए (तन्मयाकार हो गए)तो वापस वही उदय आएगा, वैसा का वैसा ही वापस। मतलब ठीक उसी प्रकार जैसे साइन किए बगैर का कागज चला गया हो, तो वह साइन (हस्ताक्षर) के लिए वापस आता है, उसी तरह।

प्रश्नकर्ता : तो इसका मतलब ऐसा हुआ कि हम में अब प्रयोगसा होगा ही नहीं?

दादाश्री : लेकिन वह कैसे होगा? होगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : हँ, प्रयोग करनेवाला जो है वह अलग हो गया, अत: प्रयोग होगा ही नहीं न!

दादाश्री : हाँ, करनेवाला नहीं है न! करनेवाला होता तो हो सकता था।

समता के हस्ताक्षर होने पर होता है निकाल

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, अभी तक जो डिस्चार्ज भाव का अहंकार बचा है और गरमी हो जाती है वह सब तो..?

दादाश्री : कुछ भी चार्ज नहीं कर सकता वह। लेकिन जितना शुद्ध किए बगैर यों ही चला गया, लेकिन जब बाद में पता चला कि यह भूल हो गई, तब उसके वापस आने पर हमें शुद्ध (साफ) तो करना ही पड़ेगा। यों ही हस्ताक्षर किए बगैर जो चला गया, वह नहीं चलेगा। हर एक पर हस्ताक्षर होने ही चाहिए। हर एक पेपर पर हस्ताक्षर होना अनिवार्य है, दूसरे शब्दों में समता के हस्ताक्षर होना ज़रूरी है।

प्रश्नकर्ता : समता के?

दादाश्री : हाँ, समभाव से निकाल के।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब अब उसका ठीक से ध्यान रखकर सभी में हस्ताक्षर कर ही देने चाहिए तब क्या समभाव से निकाल हो जाएगा?

दादाश्री : हाँ, लेकिन जब ज़्यादा *गाढ़* (जटिल) हो, तब हस्ताक्षर नहीं हो पाते और फिर रह जाता है। सफोकेशन (दम घुटना) हो जाता है। और इसी जनम में फिर से आता है दोबारा। तब हमें दुबारा उतना ही हिसाब चुकाना बाकी रहा। कपड़े आए और दो कपड़े बिना धोए रह जाएँ तो फिर वापस आएँगे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : सभी धोने ही पड़ेंगे।

यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद आपको जो क्रोध आता है उसमें, और बाहर का व्यक्ति क्रोध करता है, उन दोनों में फर्क हैं। आप *पुद्गल* परमाणुओं को खींचते नहीं हो। आपका क्रोध *पुद्गल* को खींच सके, ऐसा नहीं है और उन (बाहर के) लोगों का क्रोध तो खींचता हैं अच्छी तरह, थोक में। यानी कि जो विश्रसा थे, वह प्रयोगसा बन जाते हैं। प्रयोग अर्थात् जो इस (विभाविक) आत्मा के भाव के योग सहित जोइन्ट हुआ, वह। ऐसे जो प्रयोगसा बने वे कॉज़ परमाणु और इफेक्ट परमाणु बाद में वे मिश्रसा के रूप में इफेक्ट देते हैं। अत: आपमें सिर्फ मिश्रसा रहे और प्रयोगसा बंद हो गए। पूरे जगत् के लिए अब प्रयोगसा और मिश्रसा दोनों चल रहे हैं लेकिन फिर भी जितने मिश्रसा है उतने विश्रसा होंगे ही। जो मिश्रसा होते हैं, वे विश्रसा हो जाते हैं, लेकिन (अज्ञान दशा में) उसके सामने वापस दूसरे परमाणु (खींच) बाँध लिए होते हैं जबकि आप में मिश्रसा में से विश्रसा होते रहेंगे, (नए) प्रयोगसा नहीं होंगे। प्रयोग ज़ारी होगा तो सारी जवाबदेही आएगी। लेकिन प्रयोग ही बंद हो गया है।

कर्ताभाव से होता है परमाणु का पुनरावर्तन

प्रश्नकर्ता : विसर्जित होनेवाले परमाणुओं का पुनरावर्तन क्यों होता है?

दादाश्री : वह 'मैं कर रहा हूँ' ऐसा रहे तो पुनरावर्तन होगा, नहीं करोगे तो नहीं होगा। वह पुनरावर्तन भी इसलिए होता है कि आपका गुनाह है। आपका गुनाह यह है कि कर रहा है कोई और लेकिन आप मानते हो कि 'मैं कर रहा हूँ'। यानी कि उस गुनाह का दंड है यह।

प्रश्नकर्ता : जब 'मैं कर रहा हूँ' ऐसा भाव रहे, तभी पुनरावर्तन होता है न?

दादाश्री : हाँ, तभी वैसा होता है।

प्रश्नकर्ता : तो जहाँ-जहाँ कर्ताभाव हो जाए, तो उसका पुनरावर्तन होता है, वापस?

दादाश्री : पूरा जगत् कर्ताभाव में ही है। साधु-सन्यासी सभी कर्ताभाव में ही हैं। 'हम ही कर रहे हैं' ऐसा भान हैं। सिर्फ इस ज्ञान के कारण आपका कर्तापन छूट गया, इसलिए आप शुद्धात्मा बन गए।

चंचल परमाणु स्थिर होते हैं ज्ञान से

प्रश्नकर्ता : एक तरफ आपने परमाणु स्थिर होने की प्रकिया और प्रोसेस बताया, तो अब दूसरी तरफ वे अस्थिर और चंचल किस प्रकार से होते हैं?

दादाश्री : इस *पुद्गल* का स्वभाव ही चंचल है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर वह स्थिर कैसे होगा?

दादाश्री : ज्ञान प्राप्ति के बाद वह दिनोंदिन स्थिर होता जाता है। मूल स्वभाव में पहुँचने लगता है।

प्रश्नकर्ता : उसका मूल स्वभाव भी फिर स्थिर ही है?

दादाश्री : मूल स्वभाव स्थिर ही है। यह तो विकृत स्वभाव है। *पुद्‌गल* का जो विकृत स्वभाव है, वह चंचल और अस्थिर है।

अविरत स्थिरता से होता है विश्रसा शुद्ध

प्रश्नकर्ता : *पुद्‌गल* स्वभाव से ही चंचल है, लेकिन मूल स्वभाव से स्थिर है, वह ठीक से समझ में नहीं आया?

दादाश्री : स्थिर ही है पूरा। मूल स्वभाव से हर एक चीज़ स्थिर ही होती है, चंचल होती ही नहीं। चंचल तो सिर्फ *पुद्‌गल* ही कहलाता है, लेकिन मूल स्वभाव यानी मूल असल सहज स्वभाव। परमाणु का स्वभाव ऐसा स्थिर है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् विश्रसा के रूप से स्थिर है, ऐसा हुआ न?

दादाश्री : विश्रसा होने से पहले भी वह जो हैं, लेकिन उस *पुद्‌गल* के सामने भगवान महावीर के जैसी दृष्टि आ जाए न, तीन सौ साठ डिग्री पर दृष्टि आ जाए, उसके बाद वह स्थिर ही कहा जाएगा। स्थिर कहा जाएगा, इसका मतलब क्या है कि जिसे किचिंत्‌मात्र भी राग-द्वेष नहीं है, जो किचिंत्‌मात्र भी इमोशनल (भावुक) नहीं हो।

प्रश्नकर्ता : यानी कि कंपमान नहीं हो जाता कहीं भी?

दादाश्री : कंपमान नहीं हो जाता। कंपमान शब्द ठीक है। जब अविरत स्थिरता आ जाए, तब शुद्ध विश्रसा होती है।

जो फल देता है वह है मिश्रसा, वही *पुद्‌गल*

प्रश्नकर्ता : वे परमाणु जो मिश्रसा होते हैं, प्रयोगसा होते हैं, क्या वही *पुद्‌गल* है?

दादाश्री : जो प्रयोगसा होते हैं, उसे *पुद्‌गल* नहीं कहते। जो मिश्रसा है, वही *पुद्‌गल* है।

प्रश्नकर्ता : प्रयोगसा होने के बाद......

दादाश्री : प्रयोगसा मतलब (खुद के भावों के अनुसार) लाल-पीले रंग अंदर परमाणुओं में आ जाते हैं। और फिर फीड होते हैं। उसके बाद जब उसका परिणाम आता है, तब वे मिश्रसा बन जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : इस तरफ जो भाव उत्पन्न होते हैं या जिनके आधार पर वे परमाणु ग्रहण होते हैं तो वे भाव भी *पुद्‌गल* कहलाते हैं न?

दादाश्री : वे भाव *गलन* कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : वे *गलन* कहलाते हैं?

दादाश्री : उस *गलन* में से फिर से वापस यह उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : वह *गलन*, वही *पुद्‌गल* है क्या?

दादाश्री : वह *गलन* वापस *पूरण* खींचता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस *गलन* मतलब *पुद्‌गल* का भाव है न?

दादाश्री : *पुद्‌गल* का ही *गलन*। यह जो *पुद्‌गल है*, वह जब तक *गलन* नहीं हो जाता, तब तक जो रहता है वह *पुद्‌गल* है। जब *गलन* होता है तब वापस दूसरे *पूरण* को खींच लेता है। और अपने को (इस ज्ञान प्राप्ति के बाद) जब *गलन* होता है उस वक्त चार्ज नहीं होता। हम ऐसा कह रहे हैं।

करामात सब *पुद्‌गल* की ही

प्रश्नकर्ता : तो फिर वहाँ *पुद्‌गल* का ही कर्तापन होता है, ऐसा एक साइड का समझ में आता है।

दादाश्री : हाँ, कर्ता *पुद्‌गल* ही है। यह क्रिया भी सारी *पुद्‌गल* की हैं। जड़ की ही क्रिया है यह सारी। स्वभाव से ही सक्रिय है। चेतन कोई भी क्रिया कर ही नहीं सकता।

प्रश्नकर्ता : सक्रिय का मतलब क्या है? दादा, आप ज़रा समझाइए।

दादाश्री : निरंतर किसी न किसी क्रिया में ही लगा रहता है।

यह सारा विभाव *पुद्गल* की करामात है। *पुद्गल* अर्थात् चेतन नहीं होने के बावजूद भी उसकी करामात से ही सब पैदा होता है। *पुद्गल* यानी अनात्मा। करामात भूलभूलैयावाली (जैसी) है। मनुष्य संडास जाता है लेकिन करवाता कौन है? *पुद्गल*। इस जगत् में जो कुछ भी करामात हैं, वह *पुद्गल* की स्वतंत्र करामात है।

और जो स्कंध बनते हैं, वह तो स्वाभाविक *पुद्गल* है, उसका स्वभाव है स्कंध बनने का। स्वाभाविक रूप से इकट्ठे हो जाते हैं। कोई दो अणु इकट्ठे हो गए हों तो दो अणु, तीन अणु हों, तो तीन अणु इकट्ठे हो जाएँ तो आमने-सामने जोइन्ट हो जाते हैं सारे।

प्रश्नकर्ता : तो फिर विश्रसा के रूप में जो शुद्ध परमाणु हैं, उनमें *पूरण-गलन* है?

दादाश्री : वे क्रियाकारी हैं, सक्रिय हैं लेकिन *पूरण-गलन* ही कहलाते हैं। मिश्रचेतन को ही *पुद्गल* कहा जाता है, बाकी सभी को *पुद्गल* नहीं कहा जाता।

प्रश्नकर्ता : परमाणु और *पुद्गल* उन दोनों में फर्क बताया है न! आपने?

दादाश्री : परमाणु और *पुद्गल* में फर्क है। एक तो शुद्ध *पुद्गल* होता है और एक विशेषभावी *पुद्गल,* दो प्रकार के *पुद्गल*। शुद्ध *पुद्गल,* अर्थात् जैसे यहाँ पर बर्फ गिरे और बड़ा सा पुतला बन जाए, फिर वापस पिघल जाए तो वह शुद्ध *पुद्गल* कहलाता है और यह अशुद्ध *पुद्गल* है। दो वस्तुओं के मिलने से उत्पन्न हुआ है।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा में ऐसी कौन सी शक्ति होगी कि जो यह सब करती है?

दादाश्री : उसमें करने की शक्ति है ही नहीं। इसलिए वह खुद ही बंध हुआ है *पुद्गल* में। करने की शक्ति यह सारी *पुद्गल* की है। यह सब *पुद्गल* का ही कारोबार (व्यापार) है, करामात है। *पुद्गल* अपने आप सक्रिय होता ही रहता है। करामात नामक सक्रिय गुण दुनिया की जानकारी में नहीं है।

परमाणुओं में अहम् का स्थान कहाँ?

प्रश्नकर्ता : तो फिर अहम् का स्थान कहाँ पर आता है? दादा जो कहते हैं न, 'विशेष परिणाम खड़ा हुआ।' विशेष परिणाम से जो अहम् खड़ा हुआ, वह भी *पुद्गल* में जाएगा न?

दादाश्री : अहम् भाव, वह सारा *पुद्गल* ही है न! मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार सभी *पुद्गल,* हैं, आत्मा के सिवा सब *पुद्गल*। जितना संयोग प्राप्त हुआ, वह सारा ही *पुद्गल*। जब तक प्रयोगसा रहे, तब तक (विभाविक) *पुद्गल* नहीं कहलाता। (लेकिन विधर्मी *पुद्गल* कहलाए)।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह जो अहम् है, वह किसका भाव कहलाता है? वह किसका परिणाम कहलाता है? यह जो *गलन* हो रहा है, क्या वह उसके आधार पर उत्पन्न होनेवाली चीज़ है? यानी कि ये जो परमाणु हैं, अहम् उनमें आता है या इस चेतन विभाग में आता है?

दादाश्री : मिश्रचेतन ही। यह पूरा ही *पुद्गल* है यानी मिश्रचेतन। *पुद्गल* का अर्थ ही है मिश्रचेतन। प्रयोगसा यानी प्रयोग चेतन। प्रयोग चेतन, वह आपको दिखाई नहीं देगा।

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्टली मिश्रचेतन किसे कहते हैं?

दादाश्री : आपके भाव और परमाणु दोनों का मिक्स्चर (मिश्रण) हो जाए तो वही मिश्रचेतन।

प्रयोगसा सूक्ष्म भाव के रूप में होते हैं। दूसरे जन्म में स्थूल भाव (मिश्रसा) बनकर फल देकर जाते हैं।

जो प्रयोगसा परमाणु अंदर जाते हैं, वे कारण परमाणु है, वे कारण रूप में होते हैं और जब गर्भ में जाता है तब कार्य देह उत्पन्न करते हैं। हम मूल कारण परमाणु बंद कर देते हैं, इसलिए कारण रूप उत्पन्न नहीं होता लेकिन जब ज्ञान नहीं होता, तब वापस प्रयोगसा होता रहता है और फिर मिश्रसा होता रहता है। ऐसा चलता ही रहता है। चेतन को इससे कोई लेना-देना नहीं है। शुद्ध चेतन! अहंकार ही करता है और अहंकार ही भुगतता है, सभी कुछ

अहंकार ही करता है और *गलन* को कहता है 'मैं'। भुगतता है उसे भी 'मैं' कहता है और करता है उसे भी 'मैं' कहता है। सब कुछ 'मैं' ही करता हूँ। 'करता हूँ' वह *पूरण*। जब 'करता हूँ' कहता है न, उस समय प्रयोगसा होता रहता है और 'भुगतता हूँ' कहे, उस समय मिश्रसा होता रहता है।

भावों के अनुसार चढ़े गिलट परमाणु पर

अब जब हम ऐसा कहते हैं कि 'यह मैंने किया' और 'कितना सुंदर किया' तब जैसा भाव है वैसा ही गिलट चढ़कर प्रयोगसा परमाणु अंदर घुस जाते हैं। दो गालियाँ देने का भाव करता है न तो वैसे ही भावों का उन परमाणुओं पर गिलट चढ़ जाता है। वे भाव उन परमाणुओं को भावात्मक बनाते हैं, गिलट चढ़ाते हैं। अथवा यदि आप बोले कि 'फलाना वकील नालायक है', तो उसके साथ ही परमाणु प्रविष्ट हो जाते हैं और आपने जो उसे 'नालायक' कहा न, तो उन पर नालायक का गिलट चढ़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् वे जो शुद्ध *पुद्‌गल* (परमाणु) थे वे अंदर आकर बिगड़ गए। अंदर उन पर गिलट चढ़ गया!

दादाश्री : गिलट चढ़ गया। नालायकपने का गिलट चढ़ा और अगर आप कहो कि 'बहुत सुंदर है' तो वैसा गिलट भी चढ़ जाए। प्रयोगसा यानी क्या? गिलट चढ़ा यानी प्रयोग हो गया। यानी कि यह आयोजन कहलाता है, हाँ, गिलट चढ़ने का आयोजन!

अज्ञानी मनुष्य कुछ भी भाव करे, राग या द्वेष का विचार करे तो वैसे परमाणु खिंचते हैं। खिंचने के बाद जैसे भाव हों उन्हीं भावों में रंग जाते हैं। सोने के भाव हों तो सोने का गिलट चढ़ता है और चाँदी के भाव हो तो चाँदी का गिलट चढ़ता है। जैसे भाव से किया होता है, भुगतते वक्त फिर वैसा ही फल वह देते हैं। कषाय भाव से किया हो तो वे बहुत ही कड़वे फल देते हैं। विषय भाव से किया हो तो कड़वे-मीठे, दोनों का मिक्स्चर फल देता है। इसलिए जो-जो भाव किए हों, वैसा सारा ही अपना हिसाब बंध जाता है। एक *शाता* देता है, दूसरा *अशाता* देता है। जब हम सोचें कि मुझे आज 'फलाने का नुकसान करना है', तो वे अशुभ भाव कहलाते हैं। तब विश्रसा में से प्रयोगसा होता है। अगर शुभ भाव हों तो वे परमाणु सुख देते हैं और यदि अशुभ भाव हो तो दु:ख देते हैं लेकिन प्रयोगसा तो हो ही जाता है।

परमाणु और भाव के बीच लिंक

प्रश्नकर्ता : परमाणु और भाव के बीच कहीं तो लिंक होनी चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, ऐसा सब होता है न! भाव के अनुसार परमाणु सेट हो जाते हैं। यह भाई ऐसा भाव करे कि 'मुझे दान करना है' और दूसरा भाई भी ऐसा भाव करे कि 'मुझे दान करना है' तो दोनों में परमाणु सेट हो जाते हैं। लेकिन दोनों के परमाणु अलग-अलग होते हैं।

किस प्रकार के, किस-किस प्रकार से, हेतु क्या है, वह भी देखना होता है सबकुछ आ जाता है उसमें। दोनों में अलग तरह के होते हैं यानी कि परमाणु इकट्‌ठे हो जाते हैं, और कुछ नहीं। लेकिन भाव का ही परिणाम है, व्यवस्थित!

प्रश्नकर्ता : हाँ, मुख्य असर भाव का है।

दादाश्री : परमाणुओं का तो बीच में एक खिलौना खड़ा हो जाता है। परमाणु भाव के अनुसार हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : परमाणु का खिलौना, इसका मतलब क्या है?

दादाश्री : परमाणुओं से यह बॉडी उत्पन्न हो गई है। यह भावों से बन गई है न! यह जो बॉडी बनी है, वह भाव के अनुसार बनी है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन वे परमाणु स्थूल हैं या सूक्ष्म?

दादाश्री : परमाणु सूक्ष्म हैं लेकिन दिखते हैं स्थूल। रूपी है न! (उसके इकट्‌ठे हो जाने से) उसके मोटे-मोटे हिस्से बन जाते हैं इसलिए स्थूल हो जाते हैं। मूल परमाणु जो हैं, वे सूक्ष्म हैं।

प्रश्नकर्ता : और भाव स्थूल हैं या सूक्ष्म?

दादाश्री : भाव सूक्ष्म हैं और भाव जिन परमाणुओं को खिंचता हैं, उन्हें भी सूक्ष्म कहते हैं। बाद में परमाणु स्थूल हो जाते हैं। तब पूरा शरीर रूपक से दिखाई देता है।

कर्तापन से हैं कर्मबंधन

प्रश्नकर्ता : तो फिर इसमें सूक्ष्म कर्म किस प्रकार बंधते होंगे?

दादाश्री : आपने कहा कि 'यह मैंने किया' जबकि करता है उदयकर्म। आप अकेले ही ऐसा नहीं कहते, बल्कि बड़े-बड़े साधु-संत भी ऐसा ही कहते हैं कि 'मैं कर रहा हूँ' और वैसा ही मानते भी हैं फिर। अब कुदरत क्या कहती है कि जो 'हो रहा है' उसे तू 'मैं कर रहा हूँ' ऐसा क्यों कहता है? वह जो ऐसा कहता है कि 'कर रहा है' तो उससे कर्म बंधन होता है। जैसा बोला वैसे कर्म खड़े किए उसने। इसलिए देहधारी बनेगा। जब परमाणु खिंचते हैं तो एक तरफ मूर्ति गढ़ते हैं, वही प्रयोगसा है।

प्रयोग कर्म किसके पास जाता है? व्यवस्थित शक्ति के पास। और वहाँ पर व्यवस्थित उसे स्थूलरूप में लाकर फल देता है। वह प्रयोगसा कर्म सूक्ष्मरूपी होता है और यह (व्यवस्थित) उसे मिश्रसा में रूपांतरित करके फल देता है यदि उसने विषय की भावना की हो तो सिर्फ स्त्री ही नहीं देता, सास-ससुर, साला-साली सभी बलाएँ साथ में देता है। अत: एक विषय की तलाश में कितनी ही बलाएँ जकड़ लेती हैं! यह सब व्यवस्थित का काम है। प्रयोगसा का मतलब अभी तक अन्य कुछ नहीं हुआ है, सिर्फ परमाणु अंदर आकर इकट्ठे हो गऐ हैं, प्रयोग हो गया। उन पर रंग-वंग चढ़ गया। इसी को कर्म कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि ये कर्म के परमाणु हैं। तो क्या ये शुद्ध परमाणु अलग और कर्म के परमाणु अलग हैं?

दादाश्री : हाँ, अलग हैं। अंदर जो आकाश है न, उसमें से खींचता है, लेकिन वह सूक्ष्म है और सूक्ष्म के आधार पर बाहर से स्थूल घुस जाता है। उसके बाद ही फल देता है। पिछले हिसाब के अनुसार अंदर कर्म बंधते हैं। फिर बाद में फल देते समय बाहर से परमाणु घुसकर फिर फल देते हैं।

प्रश्नकर्ता : और कर्मबंधन के समय सूक्ष्म परमाणु ही बंधते हैं? क्या फल देते वक्त बाहर से स्थूल परमाणु आते हैं?

दादाश्री : हाँ, आते हैं। परमाणुओं में फल देने की शक्ति है लेकिन सभी संयोगों के इकट्ठे हो जाने पर ही वे फल देते हैं। रूपी भाग स्थूल (परमाणु) माने जाते हैं।

सभी शुद्ध परमाणुओं से भरा हुआ है यह जगत्, विश्रसा। लेकिन उसमें दखल कब हुई? जब आप यहाँ पर किसी को 'अबे। बेअक्ल हो, क्या कर रहे हो?' कहा कि तुरंत ही जैसे आपके कषाय होंगे वैसे ही उन परमाणुओं पर असर हो जाएगा। अज्ञानी जो कुछ भी बोलते हैं, वे सभी हमेशा कषाय ही होते हैं। प्रेमपूर्वक बोले तो राग कषाय यानी लोभ कषाय। प्रेम का वाक्य बोले तो भी कषाय कहलाता है और द्वेष का बोले तो भी कषाय कहलाता है।

अब अपनी जो यह कषायवाली वाणी निकलती है न तो ये विश्रसा परमाणु हैं, यह वाणी उस पर असर डालती है, उसे रंजित करती है, रंग जाती है, रंगीन बना देती है। जैसा कषाय होता है न, वैसा ही रंग चढ़ा देती है और फिर वह खिंचा चला आता है अपने अंदर, उसी को प्रयोगसा कहते हैं!

वह इन परमाणुओं को कब तक खींचता है? 'मैं चंदूभाई हूँ' उसे भान है, 'मैं' पन है, तब तक इन विश्रसा परमाणुओं को खींचता है। लेकिन जब स्वरूप का भान हो जाता है, 'मैं चंदूलाल हूँ' ऐसा भान चला जाता है तब परमाणु नहीं खींचता।

सामायिक से परमाणुओं का शुद्धिकरण

प्रश्नकर्ता : क्या सामायिक से (ये परमाणु) शुद्ध हो जाते हैं न?

दादाश्री : होते है न! बहुत होते हैं। सामायिक

से तो पूरा निबेड़ा आ जाता है। प्रतिक्रमण जो है, वह प्रज्ञा का काम है। इसलिए बहुत फर्क पड़ जाता है और सामायिक में वह देखता है तो सबकुछ घुल जाता है। जितने दोष दिखाई दिए, उतने धुल जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : सामायिक में तो आत्मा का ही काम है न?

दादाश्री : सीधा, डिरेक्ट।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण का क्या इफेक्ट होता है? आपने कहा कि प्रतिक्रमण से परमाणु शुद्ध नहीं होते, तो प्रतिक्रमण से क्या होता है?

दादाश्री : परमाणु तो कब शुद्ध होंगे कि, जब उन्हें 'देखेंगे' तब। और प्रतिक्रमण से परमाणु पर क्या इफेक्ट होता है? तो कहे कि सामनेवाले को जो दु:ख हो गया है, उसका अगर उस पर असर रह जाए तो वह बैर बाँधेगा। जहाँ तक हो सके अपने निमित्त से वह असर नहीं होना चाहिए। इसलिए हम चंदूभाई से कहते हैं कि 'प्रतिक्रमण करो।' ताकि सामनेवाला पर असर नहीं रहे। बस!

प्रश्नकर्ता : हाँ, हमें ऐसा पता चल जाता है कि यह प्रकृति है। प्रकृति है इसलिए मुँह से ऐसा निकल जाता है।

दादाश्री : प्रकृति करती है वह पता चलता है लेकिन उसका ज्ञान से निकाल करना चाहिए। अज्ञान से भरा हुआ, ज्ञान में रहकर जाने दो। क्योंकि वह सारी प्रकृति है लेकिन परमाणु है। वे परमाणु कैसे हैं? मिश्रसा परमाणु हैं। मिश्रसा यानी जो भर गए हैं और फल देनेवाले कहलाते हैं। भरे हुए की बजह से ऐसा कह देते हो अर्थात् तब फल दिया उन्होंने। उस समय यदि उन परमाणुओं को स्वच्छ करके भेज दें तो फिर उन परमाणुओं के साथ अपना झगड़ा (हिसाब) नहीं रहेगा।

अत: इस प्रकार आप शुद्धिकरण करके इसका निकाल कर दो। अर्थात् परमाणु जब विश्रसा हो गए तो आप मुक्त। अब इन सबसे ये शुद्ध करने की क्रियाएँ नहीं हो पातीं, इसलिए इन्हें कहते हैं कि प्रतिक्रमण करना। तो हो जाएगा शुद्ध। इनसे ऐसा सब कैसे हो पाएगा? यह तो साइन्टिफिक विज्ञान है। जागृति इतनी और वह भी आपको नहीं करना है, चंदूभाई को करना है। आपको जानना है कि चंदूभाई ने किया या नहीं किया। अतिक्रमण भी चंदूभाई ही करते हैं न?

निश्चय आत्मा तो खुद अलग ही हो गया है। लेकिन यह प्रकृति क्या कहती है? हम विश्रसा परमाणु थे और आपने हमें प्रयोगसा बनाया इसलिए हमारा परिणाम मिश्रसा हो गया है। मिश्रसा को विश्रसा करो। मतलब परमाणु शुद्ध करो। अब इसके अलावा करने को और कुछ भी नहीं बचा।

आखिर आज्ञा से होता है शुद्धिकरण

अंदर ही अंदर किसी को गालियाँ दीं और उससे तप गया या अन्य कुछ भी हुआ लेकिन अगर, समभाव से निकाल किया तो विश्रसा होकर चले जाएँगे। यानी अलग हो जाएँगे। (उतना) *पुद्गल* शुद्ध होकर चले जाएँगे। अत: उतने ही हम *पुद्गल* से मुक्त।

पुद्गल की फरियाद है। अब वह क्या कहता है? *पुद्गल* कहता है कि 'आप शुद्धात्मा बन गए, दादाश्री ने आपको मुक्त किया इसे हम भी स्वीकार करते हैं लेकिन हमारा क्या? हमें दादाश्री मुक्त नहीं कर सकते। जितना हमें कर पाना संभव था उतना तो दादाश्री ने किया, दूसरा अब आपको करना है। क्योंकि इसके ज़िम्मेदार आप हो। हम तो शुद्ध थे, बिगाड़नेवाले आप हो। हमें शुद्ध किए बगैर आप नहीं छूटोगे,' क्योंकि परमाणु क्या कहते हैं, 'हम अपने आप अशुद्ध नहीं हुए हैं, आपने, अपने भाव चुपड़े इसलिए हम अशुद्ध हो गए हैं। अत: जब हमें शुद्ध करोगे तभी आप छूट पाओगे वर्ना छूटोगे नहीं। हम जिस स्थिति में थे, उस स्थिति में रख दो। यह ज़िम्मेदारी आपकी है।'

'आपने हमें पकड़ रखा है। अब आप कहो कि 'मैं अलग हो गया, यानी कि अब धक्का मारोगे

तो नहीं चलेगा,' कहते हैं। 'अब किस प्रकार करें?' तो वह ऐसे कि 'जैसे दादाजी ने बताया हैं उस प्रकार आज्ञा का पालन करो और आराम से रस (आमरस)-रोटी खाओ। फिर पेट पर हाथ रखकर सो जाओ, ज़रा आराम करो, लेकिन निरंतर दादाजी की आज्ञा अनुसार रहो।'

इसलिए फिर हमने ऐसा कहा कि, समभाव से *निकाल* करो। अगर कोई गालियाँ दे तो समभाव से निपटारा करते रहो। अब यदि तब परमाणु तप गए तो इसका मतलब कड़वा फल आया और अंदर आनंद हो गया, मतलब मीठा फल आया। उन्हें देखते रहो तो वे फल देकर चले जाएँगे तो फिर शुद्ध होकर वे सभी परमाणु चले जाएँगे।

दादाश्री : हाँ, यदि ज्ञान में रहकर उन्हें शुद्ध करे न, तो वे विश्रसा हो जाते हैं। तब फिर उन्हें लेकर कोई जवाबदेही नहीं रहती। हमें परमाणु की जोखिमदारी (ज़िम्मेदारी) कहाँ तक है? विश्रसा न हो जाएँ तब तक। इसलिए अज्ञानता से जो भी इकट्ठे किए गए हैं, उन्हें ज्ञान से शुद्ध करके निकाल करने की ज़रूरत हैं।

अविरत स्थिरता लाए विश्रसा

प्रश्नकर्ता : आत्महेतु के लिए जो साधन होते हैं, उनसे शुद्ध परमाणु ही प्रविष्ट होते हैं न?

दादाश्री : हाँ, वे बहुत उच्च परमाणु होते हैं। जो आत्मा का ठेठ तक का हेतु पूरा कर देते हैं और अन्य सभी सहूलियतें भी पूरी कर देते हैं। आत्महेतु के लिए कोई कुछ भी करता है, उसे चक्रवर्ती जैसी सहूलियतें मिलती है।

प्रश्नकर्ता : कर्म का जो *भोगवटा* (सुख-दु:ख का असर) आता है, वह 'व्यवस्थित' के ताबे में है?

दादाश्री : हाँ, वह 'व्यवस्थित' के ताबे में है। *पुद्‌गल* की सत्ता भी 'व्यवस्थित' के अधीन है। *पुद्‌गल* की स्वाभाविक सत्ता नहीं है। यदि *पुद्‌गल* स्वतंत्र रूप से सत्ताधीश होता, तब तो किसी को भूख लगती ही नहीं न!

जब अविरत स्थिरता रहे, तब शुद्ध विश्रसा होती है। जब तक प्रयोगसा परमाणु हैं, तब तक वाणी बदलने की सत्ता है, लेकिन मिश्रसा होने के बाद किसी का भी नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : बदलने की वह सत्ता किस तरह काम करती है?

दादाश्री : हमने किसी को गाली दी हो, तो अंदर उसके परमाणु बंध जाते हैं। जैसे भाव से बंधे हों, उन परमाणुओं के हिसाब से फिर अंदर बैटरियाँ तैयार हो जाती हैं। ये तो बैटरियाँ ही 'चार्ज' होती हैं, लेकिन हम अगर थोड़ी देर बाद ऐसा बोलें कि, 'भाई मैंने यह गाली दे दी, वह मेरी बहुत बड़ी भूल हो गई।' तो पहलेवाला मिट जाएगा। लेकिन प्रयोगसा से मिश्रसा हो जाने के बाद में किसी का नहीं चलता, फिर उसे भोगना ही पड़ता है।

प्रयोगसा से समझ ले तो काम *निकाल* दे

प्रयोगसा से इम्प्योरिटी (मलिनता) खड़ी हुई, मिश्रसा में इम्प्योरिटी रिज़ल्ट में आई और जब इम्प्योरिटी खत्म हो गई, वह विश्रसा। *पुद्‌गल* की अंतिम दशा विश्रसा।

जब ऐसा समझ में आएगा और अनुभव होगा कि बाहर संसार में सब पराया है तब ऐसा समझ पाएँगे कि देह के परमाणु पराए हैं। ऐसा करते-करते, प्रत्येक परमाणु पराया है, यह समझ में आएगा।

प्रयोगसा समझे तो काम ही हो जाए, ऐसा है। हम प्रयोगसा को चार्ज कहते हैं और मिश्रसा को डिस्चार्ज कहते हैं।

धन्य है तीर्थंकरों को, जिन्होंने प्रयोगसा की खोज की है! जीवमात्र प्रयोगसा में आए बगैर रह ही नहीं सकता। प्रयोगसा में प्रवेश करने के बाद मिश्रसा होता है। मिश्रसा यानी क्या? कड़वे-मीठे फल देने का धंधा ही मिश्रसा का है। लोग कहते हैं, कि भगवान फल देता है। नहीं, मिश्रसा ही फल देता है

और फल में से वापस बीज पड़ता है, और उसमें भी, भगवान को बीज अपने घर से नहीं डालना पड़ता!

गुह्य विज्ञान ये परमाणु संबंधी

इतना गूढ़ साइन्स है कि जैसे ही आपने एक खराब विचार किया कि तुरंत ही ये बाहर के जो परमाणु हैं न! वे जाइन्ट होकर अंदर प्रविष्ट हो जाते हैं और फिर जैसा हिसाब बनता है, फिर वैसे ही फल देकर चले जाते हैं। यों ही नहीं चले जाते। यानी कि किसी को फल देना-करना नहीं पड़ता। बाहर कोई फल देनेवाला नहीं है। ऐसा कोई ईश्वर है ही नहीं जो आपको फल देने के लिए आए! जो हम द्वेष से खींचते हैं न ऐसे, जो कुछ भी खराब कहा या फिर खराब भाव किया, तो परमाणु इतने खराब आते हैं कि पसंद नहीं हों ऐसे कड़वे फल देते हैं। अच्छा भाव किया तो अच्छे फल देते हैं, मीठे फल देते हैं और यदि भावाभाव नहीं किया, 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' ऐसा रहा और कर्ताभाव बंद हो गया तो पुराने परमाणु फल देकर चले जाते हैं, दूसरे नए नहीं आते। यह साइन्स इस प्रकार से हैं। पूरी पद्धति है।

परमाणु ही सब कुछ कर रहे हैं। जैसे कि एक आदमी इतना अफीम या ऐसा कुछ घोलकर पी गया तो फिर क्या भगवान को मारने आना पड़ेगा? कौन मारता है? इसी प्रकार यह सब अफीम जैसा है। अंदर, परमाणु अलग ही तरह के बन जाते हैं। अमृत जैसे, अफीम जैसे, तरह-तरह के परमाणु, जैसे भाव हुए परमाणु वैसे बन जाते हैं। इस आत्मा की बहुत सारी अलौकिक शक्तियाँ है। जड़ में भी बहुत सारी अलौकिक शक्तियाँ हैं कि इतना सब धारण कर सकता है। जड़ की शक्ति को मैंने देखा हुआ है, इसलिए मैं कह रहा हूँ कि बहुत बड़ा साइन्स है, यह। आत्मा की शक्ति तो है ही, उसे तो पूरा जगत् भी एक्सेप्ट करता है मगर जड़ की शक्ति भी प्रचंड है। वह शक्ति आत्मा से भी बढ़कर है। इसीलिए यह सब फँसा है न! वर्ना अंदर फँसने के बाद आत्मा इच्छानुसार छूट क्यों नहीं जाता? खुद जब तक असल विज्ञान में नहीं आएगा तब तक छूटेगा नहीं।

नहीं है प्रयोगसा, ज्ञान प्राप्ति के बाद

जगत् *पुद्‌गल*मय ही है सारा। लेकिन जो सारे स्वाभाविक परमाणु हैं, वे विश्रसा कहलाते हैं। 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा जब तक था तब तक पूरे दिन धर्म क्रिया करे तो भी वह परमाणु अंदर घुसते रहें, *पूरण* होता रहे। क्योंकि 'अरे परमाणु, आप क्यों मेरे घर में घुसते हो?' तब कहे कि ''आप खुद ही *पुद्‌गल* हो। यदि आप आत्मा हो तो हमसे नहीं आया जाता। हाँ, आप 'मैं चंदूभाई हूँ' कहते हो, इसलिए हम आते हैं।'' अब 'मैं शुद्धात्मा हूँ' कहता है, इसलिए ये सभी परमाणु अंदर नहीं घुसते। कोई भी क्रिया करो तो भी परमाणु नहीं घुस सकते। अगर परमाणु घुस जाएँ तो *पुद्‌गल पूरण* हुआ करता है और फिर वापस *गलन* होगा।

लेकिन जिसे आत्मा प्राप्त हो गया, वहाँ परमाणु घुसते ही नहीं। फिर फल कहाँ से आएगा? कड़वा भी नहीं और मीठा भी नहीं। खुद के सुख में रहना है। और ये कड़वे-मीठे तो, खुद के सुख में नहीं आने देते बल्कि कड़वे-मीठे में ही रखता है। और वह खुद का स्वयं का सुख, जिससे तृप्ती रहे, निरंतर तृप्त करे। कोई वस्तु नहीं हो तो भी चलता है ऐसा खुद का सुख है।

यों भाव करने के साथ ही पूरा परमाणु चेन्ज हो जाता है और आत्मा का स्वभाव भी मूलत: ऐसा है कि जैसी कल्पना करे वैसा हो जाए। इसलिए हम आपको क्या कल्पना देते हैं कि 'तू शुद्धात्मा ही है'। आप अन्य कुछ हो ही नहीं। और वास्तव में एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है, गप्प नहीं लगाते। गप्प रहेगा ही नहीं, एक घंटा भी नहीं टिकेगा। संभवत: अंधश्रद्धा से छ: महीने टिकेगा, किन्तु लंबे समय तक नहीं रहेगा। वह तो टूट ही जाएगा और अंदर शांति नहीं देगा। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह निर्विकल्प दशा है, ऐसी स्थिति में परमाणु घुसते नहीं है, विकल्प में घुसते हैं।

मूल स्वभाव का *पुद्‌गल* विश्रसा रूप में

अनंता ज्ञेयों को वीतरागों ने एक ही ज्ञेय में

देखा था, वैसे ही इन 'दादा' ने एक ही ज्ञेय, एक *पुद्गल* को देखा है। स्वाभाविक रूप में *पुद्गल* तो एक ही है, मूल स्वभाव का *पुद्गल*। विश्रसा से बना हुआ! जगत् है, नेट (सौ प्रतिशत) शुद्ध परमाणुओं से बना हुआ।

अब वीतरागों ने जो *पुद्गल* देखा, वह क्या देखा? तो वह यह कि, *पुद्गल* की भिन्न-भिन्न प्रकार की वेराइटियाँ (विविधताएँ) हैं न उन वेराइटी को अपने ज्ञान से निकाल कर देखा कि ये सभी एक ही *पुद्गल* हैं। ये वेराइटी तो लोगों ने, बुद्धिजीवियों ने बनाई थी। अत: महावीर भगवान एक *पुद्गल* को ही देखा करते थे। अन्य कुछ भी देखते नहीं थे। वेराइटी-फेराइटी नहीं देखते थे। यहाँ तो कितनी सारी वेराइटी हैं? हर एक की दुकान पर *पुद्गल* की वेराइटियाँ होती हैं।

लेकिन भगवान क्या देखते थे कि यह स्त्री-पुरुष, यह लड़का, यह ऐसा-वैसा, यह सोना, चाँदी, पीत्तल, ऐसा वगैरह नहीं, बस एक ही *पुद्गल*। मतलब यह छोड़ना है और यह नहीं छोड़ना है ऐसा नहीं, सब एक ही *पुद्गल* है। एक ही *पुद्गल* की तरह देखा करते थे, बस। अन्य कुछ भी नहीं देखते थे भगवान। भगवान बहुत पक्के इन्सान थे। वर्ना कच्चा पड़ जाए वह मार खाता है न! कीलें ठोकनेवाला कच्चा पड़ गया लेकिन कीलों की चोट खानेवाले पक्के थे, वे चले गए। कैसे खाई होंगी उन कीलों की चोट कि वे चले गए और मारनेवाला रह गया? एक ही *पुद्गल* देखा, *पुद्गल, पुद्गल* को मारता है।

ज्ञायक-ज्ञेय संबंध से *संवरपूर्वक विश्रसा*

प्रश्नकर्ता : आपने शुद्धात्मा दिखा दिया, अब उसमें और कुछ तो नहीं रहा न?

दादाश्री : अपना खुद का (कुछ) नहीं रहा, लेकिन ये पिछली गुनहगारी शेष रही न!

प्रश्नकर्ता : वह भुगत लेंगे, उसमें हर्ज नहीं है! उदय में ऐसा कुछ होगा तो भुगत लेंगे।

दादाश्री : नहीं, सिर्फ भुगत लेने से नहीं चलेगा। वह तो आप भुगत लोगे। लेकिन उससे फिर उसका *निकाल* नहीं होगा, उसका निबेड़ा नहीं आएगा। तब वे क्या कहते हैं कि हर एक *पुद्गल* को इस प्रकार 'देखकर' निकालो कि, आप ज्ञायक हो और यह *पुद्गल* ज्ञेय है। यदि आप ज्ञायक-ज्ञेय का संबंध रखोगे तब ज्ञेय स्वच्छ होकर, शुद्ध होकर चले जाएँगे। ज्ञेय यानी *पुद्गल*। जो अस्वच्छ है वह स्वच्छ होकर चले जाएँगे। यानी कि जितने-जितने स्वच्छ होकर गए उतनी फाइलों का *निकाल* हो गया। शुद्ध करने से परमाणु विश्रसा हो जाते हैं। *संवर* (कर्म का चार्ज होना बंद हो जाना) रहता है, (कर्म) बंध नहीं पड़ता। हालाँकि विश्रसा तो जीवमात्र में होती है, लेकिन उनमें बंध पड़कर विश्रसा होता है। जबकि यहाँ (ज्ञान प्राप्ति के बाद) बंध पड़े बगैर *संवर*पूर्वक विश्रसा होता है।

परमाणु के हिसाब चुक देने पर होती है मुक्ति

'एक परमाणु मात्र नी मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलंक रहित अडोल स्वरूप जो,
शुद्ध निरंजन चैतन्यमूर्ति अनन्यमय,
अगुरु-लघु अमूर्त सहजपद रूप जो।'

– श्रीमद् राजचंद्र

वे कहते हैं कि एक परमाणु की भी स्पर्शता नहीं हो, तभी 'पूर्ण कलंक रहित स्वरूप अविचल' रह सकता है। जब तक, जिस-जिस चीज़ के परमाणु ग्रहण किए हैं, वे ग्रहण किए हुए सभी को पहुँच जाएँ और किसी की भी लाल झंडी नहीं आए, तब हमें समझ लेना चाहिए कि सभी हरी झंडी दिखा रहे हैं, अर्थात् परमाणु पहुँच गए। इसका मतलब कलंक नहीं रहा, क्योंकि किसी ने भी लाल झंडी नहीं दिखाई। अत: कलंक रहित अविचल स्वरूप, हमारी जो स्थिरता है। उसे अब कोई डिगा दे, ऐसा नहीं हो सकता।

अत: सभी परमाणु चुका देने पड़ेंगे। प्रत्येक परमाणु का हिसाब चुका देना पड़ेगा। ये सभी परमाणु लोगों से लिए हुए हैं, वे परमाणु लोगों को वापस कर दिए, तो हम मुक्त हो गए!

– जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

२२ फरवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल के दादानगर हॉल में जी.एन.सी डे समारोह बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया। सीमंधर सिटी और अंबा टाउनशीप में रहनेवाले ३-२१ वर्षीय बेबी, लिटल और यंग महात्मा ग्रुप और गुरुकुल के बालकों सहित ४५० बालकों और युवाओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। यंग एम.एच.टी के युवाओं ने प्रेरणादाई शेडो डेन्स प्रस्तुत किया। जिसमें धर्म के भेदभावों को भुलाकर निष्पक्षपाती बनने का संदेश दिया गया था। बेबी, लिटल और यंग एम.एच.टी की बालिकाओं ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया, जिसमें बताया गया था कि अलग-अलग प्रकृतिवाले किस तरह सुख से साथ में रह सकते हैं। कार्यक्रम के अंत में पूज्य श्री ने जी.एन.सी के सभी बच्चों और कॉर्डिनेटरों के साथ भोजन-प्रसाद लिया।

२५ फरवरी से ८ मार्च : महात्माओं के लिए पूज्य श्री के संग उत्तर भारत जात्रा का आयोजन किया गया। जिनमें १२०० जितने महात्मा पूज्य श्री के संग अहमदाबाद से स्पेश्यल ट्रेन द्वारा वैष्णव देवी, हरिद्वार-ऋषिकेश, मनाली, आनंदपुर साहिब तथा चंडीगढ़ जाने के लिए रवाना हुए। पूज्य श्री ने भी २१ डिब्बे की इस स्पेश्यल ट्रेन में सभी महात्माओं के संग यात्रा की और यात्रा के दौरान सभी महात्माओं ने दर्शन, भक्ति और गरबा का अनुपम आनंद उठाया।

२७ फरवरी को पूज्य श्री के संग महात्माओं ने माँ वैष्णदेवी के मंदिर में दर्शन, भक्ति और जगत् कल्याण की भावना की और प्योरिटी से जगत् कल्याण का काम हो पाए ऐसी प्रार्थना की।

१ मार्च को पूज्य श्री के संग सभी महात्मा बारिश में गंगाघाट गए और आरती का आनंद उठाया और साथ में श्री सीमंधर स्वामी तथा दादा भगवान की भी आरती की गई। गंगा के तट पर पूज्य श्री ने भावना की थी कि 'दादाई ज्ञान गंगा और गंगा नदी' निरंतर बहती रहे जो लोगों के दुःख और अज्ञान को दूर करते ही रहे।

४ मार्च को महात्मा मनाली पहुँचे जहाँ पर अचानक हुई हिमवर्षा में पूज्य श्री ने महात्माओं पर बर्फ फेंककर आशीर्वाद देकर आनंद करवाया।

६ मार्च को मनाली में किआ केम्प में पूज्य श्री का ४४ वाँ ज्ञान दिन मनाया गया और पूज्य श्री ने महात्माओं से ऐसे आशीर्वाद माँगे कि प्योरिटी से जगत् कल्याण का कार्य हो पाए। मनाली से वापस आते हुए आनंदपुर साहिब गुरुद्वारा के दर्शन किए और विरासत-ए-खालसा म्यूज़ीयम देखी। अंत में चंडीगढ़ के रॉक गार्डन और सुख लेक पर भी गए, पूरी जात्रा के दौरान सभी महात्माओं को पूज्य दादाश्री तथा नीरू माँ की सूक्ष्म हाज़िरी तथा संपूण रक्षण का अहसास हुआ था।

८-९ मार्च : चंडीगढ़ में पहली बार पूज्य श्री के सत्संग और ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश के विविध जिलों से लोग आए थे, ज़्यादतर टी.वी. के माध्यम से। सत्संग के दौरान लोगों ने अपने-अपने ज्ञान के अनुभव कहे। ३५० लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया जिनमें से कई सिख लोगों भी थे।

१४-१७ मार्च: सुरेन्द्रनगर त्रिमंदिर के आँगन में पहले दो दिन सत्संग और ज्ञानविधि का आयोजन हुआ जिनमें सुरेन्द्रनगर और आसपास के गाँवों से आए २००० लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया।

१६ मार्च २०१४, रविवार के दिन आयोजित सुरेन्द्रनगर त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में सुरेन्द्रनगर तथा देश-विदेश से आए महात्माओं सहित लगभग १५००० लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। सुबह ९.३० से १ बजे तक पूज्य श्री ने मुख्य तीन भगवंतों की प्राणप्रतिष्ठा विधि की। प्रतिष्ठा के दौरान महात्माओं ने सामूहिक रूप से त्रिमंत्र, नमस्कार विधि तथा असीम जय-जयकार किए। प्रतिष्ठा के बाद पूज्य श्री ने अपने उद्‍बोधन में कहा कि यहाँ स्थापित सर्वे भगवंतों की बहुत सुंदर प्रतिष्ठा विधि हुई है और श्री सीमंधर स्वामी की दिव्य चेतना यहाँ पर उतर आई है। दादा और नीरू माँ को प्राणप्रतिष्ठा करने तथा त्रिमंदिर में पधारने का आह्वान देता हुआ पद गाया गया और तीनों शीखरों पर ध्वज फहराई गई। दुपहर ४ से ७ बजे तक तीर्थंकर भगवंतों का प्रक्षाल-पूजन तथा सर्व भगवंतों का पूजन और आरती की गई। उसके बाद सभी उपस्थित लोगों ने प्रतिष्ठित भगवंतों के भावपूर्वक दर्शन किए। रात को मंदिर में विशेष भक्ति कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पूज्य श्री ने दूसरे दिन सवेरे त्रिमंदिर के मंगल द्वार खोले। पूजन और आरती के बाद सेवार्थी महात्माओं के लिए पूज्य श्री के विशेष सत्संग-दर्शन का कार्यक्रम रखा गया था।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पाली **दिनांक : 8 मई (गुरु)** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9461251542
स्थल : मेवारा समाज भवन, कोलेज रोड, पाली

जयपुर **दिनांक : 9 मई (शुक्र)** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9785891606
स्थल : विनोबा ज्ञान मंदिर, बी-190, प्राकृतिक चिकित्सालय के सामने, युनिवर्सिटी रोड, बापुनगर.

दिल्ली **दिनांक : 10 मई (शनि)** **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 9810098564
स्थल : लौरेल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा.

चंडीगढ **दिनांक : 11 मई (रवि)** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9872188973
स्थल : सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर 32-डी, चंडीगढ.

जालंधर **दिनांक : 12 मई (सोम)** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9814063043
स्थल : घर नं.1236, अर्बन एस्टेट फेज-1, मेयर वर्ल्ड स्कूल के बाजु में, जालंधर

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हररोज - रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन - गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

UK
- **'विनस'** (डीश टीवी चेनल 805-युके) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'साधना'** पर हर रोज़ - **सुबह ७-४० से ८-१० और शाम ७-१० से ७-४०** (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन-नेशनल'** पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन -गिरनार'** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST

USA-UK
- **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

Australia
- **'कलर्स' चेनल** पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

Singapore
- **'कलर्स' चेनल** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' चेनल** पर हर रोज़ सुबह ५-३० से ६ (हिन्दी में)

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, **अहमदाबाद:** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** 9924343335, **राजकोट त्रिमंदिर:** 9274111393, **भूज त्रिमंदिर:** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिर:** (02672) 262300, **मुंबई:** 9323528901, **दिल्ली:** 9310022350, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 033-32933885, **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947, **केन्या:** +254 722722063

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

मुंबई

१ मई (गुरु) - शाम ६ से ९ - **GNC डे - बेबी-लीटल-यंग MHT ग्रुप के बालकों-युवानो के द्वारा कार्यक्रम**
२-३ मई (शुक्र-शनि) - शाम ६ -३० से ९ - **सत्संग** तथा **४ मई** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : अंधेरी स्पोर्ट्स कोम्प्लेक्ष, जे.पी.रोड, **अंधेरी (वेस्ट)**. **संपर्क :** 9323528901
५ मई (सोम) - शाम ६ -३० से ९ - **महात्माओं के लिए सत्संग**
६ मई (मंगल) - शाम ८ से १०-३० - **सत्संग** तथा **७ मई** (बुध), शाम ७ से १०-३० - **ज्ञानविधि**
८ मई (गुरु) - शाम ८ से १०-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : KDMC ग्राउन्ड, पेंढरकर कोलेज के पास, घरडा सर्कल, **डोम्बीवली (इ.)** **संपर्क :** 9323528901

अडालज त्रिमंदिर

१७ मई (शनि) - शाम ४ -३० से ७ - **सत्संग** तथा **१८ मई** (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**

गोधरा

२३ मई (शुक्र) - शाम ६ -३० से ९ - **महात्माओं के लिए सत्संग**
स्थल : गोधरा त्रिमंदिर, भामैया गाँव, एफ.सी.आई. गोडाउन के सामने, गोधरा. (गुज.) **संपर्क :** 9825431503

दाहोद

२४ मई (शनि) - शाम ७ से ९-३० - **सत्संग** तथा **२५ मई** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
२६ मई (सोम) - शाम ७ से ९-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : सिटी ग्राउन्ड, सिंधी सोसायटी के सामने, दाहोद. (गुजरात) **संपर्क :** 9428029280

अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१४

सत्संग शिविर : **दि. २९ मई से १ जून २०१४ , समय :** सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७
ज्ञानविधि : **दि. ३१ मई,** दोपहर ३-३० से ७
तीर्थ यात्रा : **दि. २ जून** - पूज्य श्री के साथ आगलोड तीर्थ । **यात्रा चार्ज** - रु. 400 नोन ए.सी., रु. 600 ए.सी.

- बच्चों-युवकों के लिए इस शिविर के दौरान अलग से विशेष संस्कार सिंचन शिविर का आयोजन किया गया है।

- यदि आप 2 जून को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 3 जून का लें।

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए १५ मार्च से १५ मई २०१४ तक रजिस्ट्रेशन होगा।** निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है और यदि आपके नज़दीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. **079-39830400** पर (सुबह ९-३० से शाम ६) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

दिल्ली	: 9810098564	**कोलकता**	: 9830006376	**अमरावती**	: 9422915064
जलंधर	: 9814063043	**रायपुर**	: 9329644433	**जलगाँव**	: 9420942944
कानपुर	: 9452525981	**भिलाई**	: 9827481336	**मुंबई**	: 9323528901
जयपुर	: 8290333699	**इन्दौर**	: 9893545351	**पूणे**	: 9422660497
पाली	: 9461251542	**भोपाल**	: 9425676774	**हैद्राबाद**	: 9989877786
पटना	: 9431015601	**जबलपुर**	: 9425160428	**बंगलूर**	: 9590979099
मुजफ्फरपुर	: 7209956892	**औरंगाबाद**	: 8308008897	**चेन्नई**	: 9380159957

अप्रैल २०१४
वर्ष-९ अंक-६
अखंड क्रमांक - १०२

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

सुरेन्द्रनगर त्रिमंदिर में महात्माओं की उपस्थिति में दादाजी की आरती करतें पूज्यश्री

"अवस्थाओं के रूप में सतत चलता परमाणु का चक्र"

अब कोई अज्ञानी इंसान, 'मैं चंदूभाई हूँ,' ऐसा मानकर, ज़रा सा भी बुरा विचार करे, क्रोध-मान करें, गुस्सा करे तो उसी के साथ परमाणु अंदर खिंचते हैं। बाहर तो ये परमाणु शुद्ध ही हैं, विश्रसा ही हैं, लेकिन बुरा विचार आया कि तुरंत ही वे परमाणु अंदर खिंचते हैं, उस समय प्रयोगसा बनकर अंदर प्रवेश करते हैं। वे परमाणु विश्रसा में से प्रयोगसा बनते हैं। क्रोध-मान-माया-लोभ करते ही वे तुरंत प्रयोगसा बन जाते हैं। ये प्रयोगसा परमाणु, दूसरे जन्म में मिश्रसा कहलाते हैं और वे मिश्रसा फल देने के लिए तैयार होते हैं। वे जब परिपक्व हो जाते हैं तब फल देकर जाते हैं। निर्जरा होने पर वे वापस जैसे थे वैसे ही विश्रसा बन जाते हैं। कड़वा-मीठा भोग, भोगने के बाद वापस जैसे थे वैसे ही परमाणु, फल देते ही विश्रसा बन जाते हैं। इस प्रकार प्रयोगसा-मिश्रसा-विश्रसा का चक्र चलता ही रहता है।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.